ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

जनवरी, 2014

₹10

दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय
आर्य महासम्मेलन में शोभा यात्रा का एक दृश्य

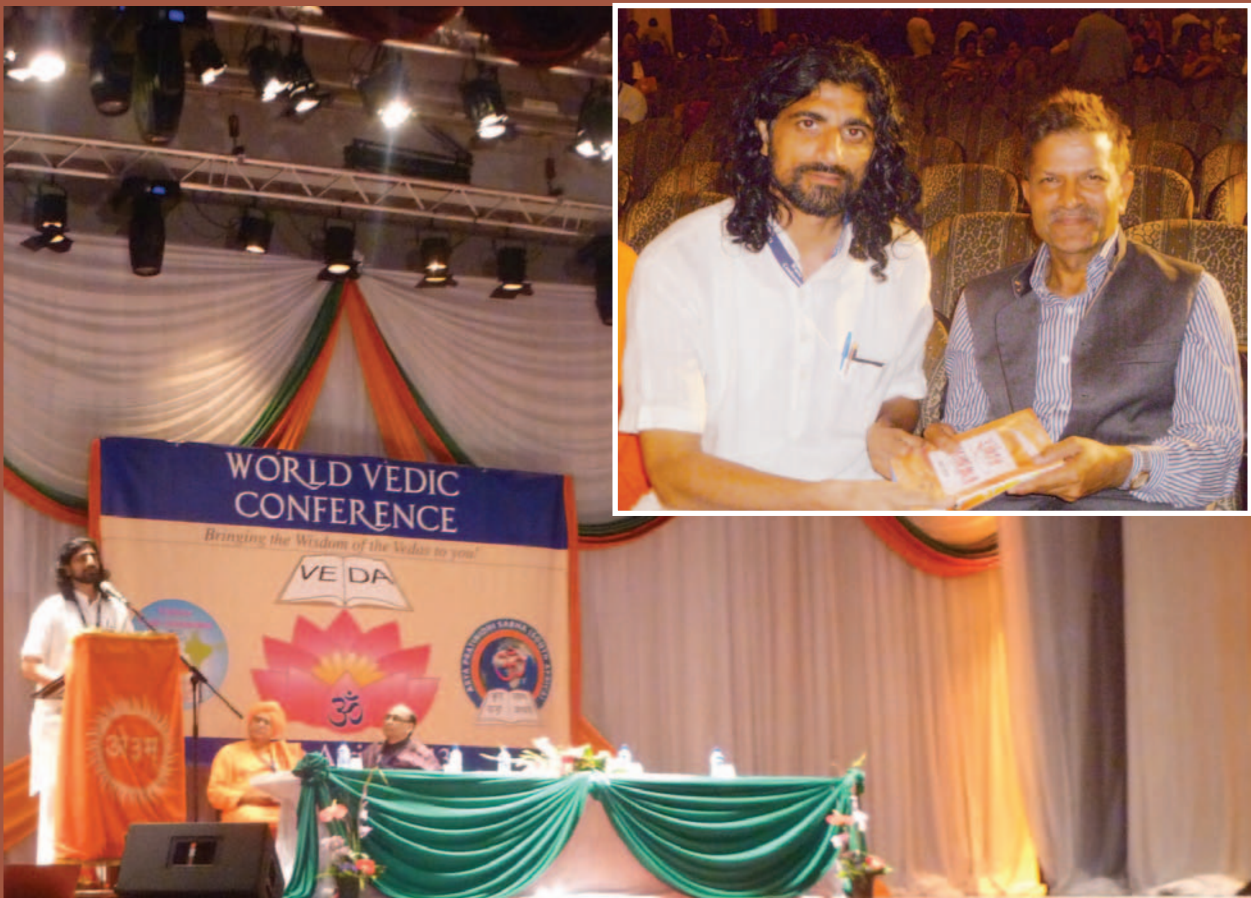

दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सम्बोधित करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी तथा भारतीय उच्चायुक्त को वैदिक साहित्य भेंट करते हुए आचार्य जी। (इनसेट)

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में दिल्ली में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह के दृश्य। मंच पर साधु-संन्यासी व नेतागण (ऊपर)
विशाल शोभायात्रा का नेतृत्व करते प्रमुख आर्यजन (नीचे)

ओ३म

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

जनवरी २०१४

वर्ष : १५ अंक : १२ पौष २०७० विक्रमी
स ष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९६-६४३४०)

संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर

कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

बलवान जातियों की भक्ति निभती है, निर्बलों की नहीं। क्योंकि भक्ति को कदम कदम पर अपनी परीक्षा देनी पड़ती है। यह परीक्षा कभी मनोबल की होती है तो कभी शरीर बल की। **-लाला लाजपतराय**

क्या? कहाँ?....

आलेख

बोस का पत्र : माता के नाम	६
वेदों की प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले	११
बच्चों को मानव जाति की सेवा के लिए तैयार करें	१३
वे डाकू लुटेरे नहीं थे। (क्रांति की बलिवेदी पर)	१५
तीन प्रकार के बंधन : वेद-चिन्तन	२०
रक्षा के लिए प्रार्थना	२२
हमारी घरेलू औषधियाँ	२४
महान वैज्ञानिक अगस्त्य मुनि	२८
स्वदेशी राज्य सर्वोपरि (अन्ततः)	३४

कहानी/प्रसंग : साधक और साधना : १८, अवसर मत चूको-२७,

कविताएँ- २७, ३०

स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, बाल वाटिका २६, भजनावली २६ **समाचार सूचनाएँ**

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम्।।९६।।

वसु आदित्य रुद्र देवों को हे प्रभु जी! तुम पहिचानो।
उनके शुभ गुण हम में भर दो यज्ञयोग्य हम को जानो।।
घृतमिश्रित हवि देने वाला जो याज्ञिक मानव जन है।
उसको तुम आनन्दित कर दो दूर भगे जो दुर्जन है।।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

कुछ अपने बारे में भी--

❒चन्द्रभानु आर्य

प्राय: कोई भी धार्मिक या नैतिक उपदेश देते समय यह बात कही जाती है कि दूसरों के बारे में भी सोचो। दूसरों का उपकार करना मनुष्य का धार्मिक कर्त्तव्य है, इसलिए सभी धार्मिक कृत्यों में परोपकार का बहुत निर्देश किया जाता है। वास्तव में परोपकार आदि जो कार्य किये जाते हैं उनका उद्देश्य आत्म कल्याण ही होता है। जो स्वार्थ छोड़ने को कहा जाता है, वे तुच्छ सांसारिक स्वार्थ ही हैं। आत्म कल्याण का स्वार्थ स्वार्थ नहीं रहता, वह परमार्थ हो जाता है। वह तो मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही है।

धर्म के जो लक्षण विभिन्न विद्वानों ने बताए हैं, उनमें से एक यह भी है कि-

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अर्थात् दूसरों के प्रति वह आचरण मत करो जो तुम्हारे लिए प्रतिकूल हो। जो व्यवहार तुम अपने साथ चाहते हो वही दूसरों के साथ करो। यहाँ भी व्यवहार की कसौटी अपने आप से ही है। अपने आप से कोई बुरा व्यवहार नहीं चाहता। जब आप यह चाहते हैं कि कोई आपके नियम न तोड़े तो दूसरों के नियम क्यों तोड़ते हो! आप सुख चाहते हो, शाँति चाहते हो-- दूसरों को भी वह प्राप्त करने दो-- पर यह तो इस का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि तुम अपने लिए क्या चाहते हो, इस पर गंभीरता से विचार करो। थोड़ा अपने बारे में भी सोचो। जब अपने अनुकूल बातों का पता चलेगा तभी तो हम दूसरों के साथ अनुकूल व्यवहार कर पाएँगे।

अपने बारे में सोचना ही तो अध्यात्म है। और यह धर्म के विपरीत नहीं है। बल्कि यह तो धर्म का आधार है। अध्यात्म के बिना धर्म या नैतिकता की कल्पना भी कैसे की जा सकती है, यह समझ से बाहर की बात है। और जिसमें आत्म-कल्याण की बात हो, और जिसके आधार पर धर्म खड़ा हो, वह स्वार्थ तो कभी हो ही नहीं सकता।

आईये, अपने बारे में सोचें? क्या प्रातः देर से उठना अच्छा लगता है? क्या ज्यादा खाना या बार बार खाना अच्छा लगता है? हम अपने बारे में सोचेंगे तो हमें पता चलेगा कि यह हमारे लिए न केवल हानिकारक है बल्कि आत्म-कल्याण में बाधक भी है। जो व्यक्ति अपना ही भला नहीं करता, वह दूसरों का भला क्या करेगा? अपना स्वास्थ्य खराब कर लेगा तो दूसरों का उपकार कैसे कर पाएगा। वह तो घर पर परिवार पर समाज पर बोझ बन जाएगा।

शरीर के साथ-साथ मन में विकृतियाँ हैं। वे अपने लिए न सोचने के कारण ही हैं। दूसरा कैसा है? इसके बारे में पूरी पूरी रिसर्च कर डाली है। कभी अपने बारे मे क्यों नहीं सोचा? अपने विकारों की ओर ध्यान दिया? दूसरा कोई हमारी हानि कर पाए या न कर पाए, हम उसके बारे में नकारात्मक सोच सोच कर अपनी हानि कर ही लेते हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि हमें क्या सोचना है-- इसका निर्धारण भी हमारे विरोधी कर रहे हैं। पूरा दिन षडयन्त्र, निन्दा-चुगली, छल-कपट, ईर्ष्या-दम्भ करते हैं। इससे हम किसी और का कुछ नहीं बिगाड़ पाते, अपना चिन्तन दूषित करते हैं। यह हम वही तो करते हैं जो हमारा विरोधी चाहता है। वह चाहता है कि हमारी एकाग्रता भंग हो, हमारा ध्यान बंटे-- हमारा काम खराब हो-- क्या हम भी यही चाहते हैं? अपने बारे में सोचेंगे तभी तो पता चलेगा ना।

हमारी क्या आवश्यकताएँ हैं! मनुष्य को धन चाहिए। यह तो चिन्तन सार्वभौमिक है। पर किसलिए चाहिए? यह सोचना शेष है। परमात्मा की आज्ञा है कि खूब परिश्रम करो-- खूब धन कमाओ। पर यह तो पता होना चाहिए कि उसका करना क्या है! उसका उपयोग करना तो आना चाहिए। अभी एक सर्वेक्षण आया कि देश के पचासी लोगों के पास देश का आधा धन है। वे सबका खा गए। बाकी भूखे रह गए। पर वे तो अभी संतुष्ट नहीं हुए। कमाते ही जा रहे हैं। नई-नई कम्पनियाँ बना रहे हैं। नए-नए तरीके खोज रहे हैं। वास्तव में संतोष चाहिए। और वह कहीं बाजार में नहीं मिलता। चिन्तन में मिलता है। पूर्ण परिश्रम में सन्तोष मिलता है। उसके पश्चात् जो सफलता या द्रव्य मिलता है वह तो उसका प्रतिसाद है। पर जो संतोष कृतकार्यता में मिलता है, वह और कहीं नहीं मिल सकता कि मेरे करने में कोई कमी नहीं रही-- स्वाहा! बहुत अच्छा हो गया।

अध्यात्म में परमात्मा को इसलिए जोड़ते हैं क्योंकि वही आत्मा का सच्चा मित्र है। और तो तभी तक के साथी हैं जब तक शरीर है। वही निकटतम है। परोपकार का, पुरुषार्थ का पाठ परमात्मा ही बताता है। यह बहुत सहज और स्वाभाविक है। आत्म-कल्याण की सोचो! जिन्होंने किया, उन आप्त पुरुषों से पूछो। यह आत्म-कल्याण का रास्ता विश्व के कल्याण की भावना से होकर गुजरता है। अपने बारे में सोचकर ही हम सच्चा परोपकार कर सकते हैं।

आपकी सम्मतियाँ

मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि आपके कुशल मार्गदर्शन में प्रकाशित शांतिधर्मी पत्रिका आम जनता की आवाज बनने के साथ-साथ अनेकता में एकता पर आधारित अपने देश की गरिमापूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशेषताओं से आज की बाल एवं युवा पीढ़ी को न केवल परिचित ही करा रही है, अपितु उन्हें इस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित भी कर रही है। इसके लिए आपको साधुवाद! बधाईयाँ!

डॉ॰ जगदीश गांधी
संस्थापक प्रबंधक- सिटी मांटेंसरी स्कूल
१२, स्टेशन रोड लखनऊ-२२६००१

सितम्बर १३ अंक पाकर पाठक ने एक गहरी सांस ली। उपनिषद् के वाक्य का हिन्दी अनुवाद भी होता तो पाठक और अधिक लाभान्वित होते। पहले भी कई बार अनुरोध किया है ताकि संस्कृत साहित्य का सम्मान बढ़ सके। चरित्र को आदर्श मानकर ही मानव कहलाया जा सकता है। यहाँ भी संस्कृत कोष से पाठकों को खाली हाथ ही लौटना पड़ा। क्षमा कीजिये चरित्र भी खोया- जब तीन दशक की तपस्या के उपरान्त एक ऋषि ने नाव में नगर पधारते हुए सरेआम एक युवती के कारण अपनी तपस्या को भंग कर दिया। (उक्त प्रकरण विदेशी आक्रमण का था। जब भारतीयों ने अपने अस्मिता की रक्षा के लिए सब प्रकार का संघर्ष किया-सं॰) स्वामी दयानन्द महामानव थे। टी॰ वी॰ चैनलों के हर विज्ञापन में बहुनग्न नारियों का प्रदर्शन नेताओं/शासकों की चांडाल चौकड़ी की नग्न माफिया से सांठ-गांठ का परिणाम है। चाणक्य नीति मानव को देव बनाती है। डॉ॰ वेदप्रताप ने हिन्दी दिवस पर भाषायी नैतिकता का वास्तविक पाठ पढ़ाया है। प्रो॰ डॉ॰ लोखंडे जी नेताओं का अपराधी होना ही कमजोरी लाता है। डॉ॰ गांधी जी! स्कूली छात्रों को ब्ल्यू फिल्मों का गुलाम बनाने के लिए नग्न माफिया मैदान में उतर आया है। देश के शासक जानते हुए भी मौन हैं। देश का क्या होगा? स्व॰ अग्रवाल की काव्य टुकड़ी देश प्रेम का अग्नि बाण है। देवराज आर्य जी! सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त जज को बेटे के हैवानी स्वभाव के विरुद्ध पुकार करनी पड़ती है। संयुक्त परिवार तबाह हो रहे हैं। वृद्धाश्रम बढ़ रहे हैं। क्या होगा हमारा? बाल वाटिका की पठन सामग्री नीरोग भारतीय कौम का निर्माण करती है। प्रेरक प्रसंग शांतिधर्मी का अर्ग (निचोड़) है।

धर्मसिंघ गुलाटी
५४/१३, शक्ति नगर
पटियाला -१४७००३ (पंजाब)

पढ़ो नित शांतिधर्मी।।

शांतिधर्मी पत्रिका करती नव-निर्माण।
घर-समाज इस देश की, बनी सर्वदा आन।।
बनी सर्वदा आन, धनी साहित्य प्रकाशे।
ले साहित्य नवीन, अंक अक्तूबर मासे।।
प्रेरक सभी प्रसंग, कहें बन जाओ कर्मी।
पाओगे सुख-धान्य, पढ़ो नित शांतिधर्मी।।

डॉ॰ सुरेश प्रकाश शुक्ल (वरिष्ठ साहित्यकार)
सम्पादक, प्राची प्रतिभा (मासिक पत्रिका)
५५४/९३ पवनपुरी लेन ९, आलगबाग, लखनऊ-०५

प्रेरक पत्रिका शांतिधर्मी का दिसम्बर अंक मिला। सम्पादकीय भ्रष्टाचार का उपाय विचारणीय है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम जिस भ्रष्टाचार के उन्मूलन की बात कर रहे हैं, वह सरकार से संबंधित लोगों द्वारा किये जाने वाले आर्थिक घोटालों तक ही सीमित है। सरकार द्वारा पास कराए गए लोकपाल बिल का उद्देश्य तो आगामी चुनावों में विपक्ष की आलोचना से बचने तक ही समझना चाहिए। जबकि सरकार से संबंधित लोगों के ऊपर ही भ्रष्टाचार के आरोप हैं जिनसे प्रधानमंत्री कार्यालय तक कलंकित हुआ। कानून इससे पहले से भी थे। बात नीयत की है। एक ही कानून की अलग-अलग तरीके से व्याख्या करके कुछ लोगों को दण्डित किया जा सकता है जबकि कुछ लोग साफ बच जाते हैं। भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए शुचिता की आवश्यकता है। इसके लिए नैतिक क्रांति की आवश्यकता है। शुरुआत हमें अपने घरों से ही करनी होगी। पारिवारिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक नेतृत्त्व की कथनी और करनी में अन्तर न हो। उनका जीवन दूसरों के लिए अनुकरणीय होना चाहिए। शांतिप्रवाह के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ भी प्रेरक और संस्कारप्रद हैं।

प्रो॰ शामलाल कौशल
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

सोम सरोवर (तृतीय खण्ड)

गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

इन्द्र को इन्दु का पुरस्कार

❑पं० चमूपति जी

आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभिः श्रियः। इन्दुरिन्द्राय धीयते।।३।।

ऋषिः- जमदग्नि=चलती फिरती आग।

कलशाम्= मीठी-मीठी मूक ध्वनि से गुनगुना रहे (हृदयरूपी) मटके को, आविशन्= आविष्ट कर, प्रेम भाव से भरा, सुतः= पैदा हुआ, इन्दु= संसार भर को सरसा रहा सजीवन रस, विश्वा श्रियः =सब विभूतियों को, अभि अर्षन्= सब ओर से समेटता हुआ इन्द्राय=इन्द्रियों के राजा की, धीयते= भेंट किया जा रहा है।

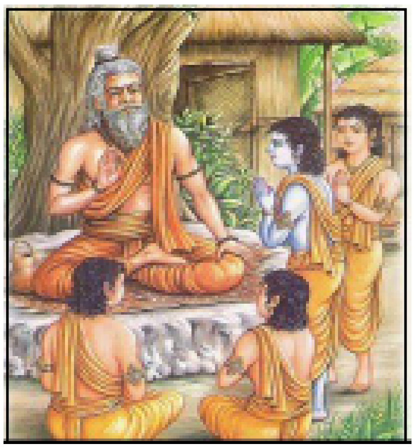

मोहन! मेरा हृदय छलक रहा है। इसमें मीठी मीठी गुंजार उठ रही है। कल-कल करती प्रेम की गंगा बह रही है। सच कहना, यह गुंजार किसकी है? क्या तुम्ही मेरे हृदय-कलश में बैठ हल्की-हल्की जल तरंग सी बजा रहे हो? यह लहरें- यह तरंगे क्या तुम्हारे करुणा सिंधु की हैं?

मेरा हृदय आविष्ट है। उसमें बिजली सी दौड़ रही है। क्या इस मीठी विद्युत् का संचार करने वाले तुम्हारे मृदु मधुर हाथ हैं? इस विद्युत से एक रस पैदा हो रहा है। मेरा रोम रोम इस रस में डूबा जा रहा है। इस रस में कैसी मिठास है? कैसा सात्त्विक उन्माद है? मैं इस रस में डूबा अपने तन मन की सुध बिसरा रहा हूँ।

देखना! देखना!! यह रस मुझ ही तक परिमित नहीं। मेरे हृदय-कलश तक, मेरी नस-नस, नाड़ी-नाड़ी तक परिमित नहीं। यह रस तो संसार भर का संजीवन स्रोत है। संसार भर की विभूतियाँ इसी रस की करामात हैं। सूर्य का प्रखर प्रकाश, चाँद की भोली मीठी मुस्क्यान, उषा की लाली, संध्या का सिन्दूर सब इसी रस की रंग बिरंगी तसवीरें हैं।

पत्ते-पत्ते में रोमांच है। डाल-डाल के देह पर सात्त्विक स्वेद है। पशु-पक्षी सभी मस्त हैं।

और मेरा हृदय! अब तो सारा विश्व ही मेरा हृदय हो रहा है। हरी घास की पत्ती-पत्ती मेरा रोंगटा है। मेरे हृदय की गुंजार विश्व वीणा की गुंजार है। जो तान मेरे अन्दर से उठती है, वही बाहर से सुनाई देती है। जगत् सोममय है। मेरे सोम का सवन जगत् भर के हृदय कलश में हो रहा है।

लो! फूलों ने अपनी प्यालियाँ भर लीं। तारों ने अपनी किरणों के चमचों में वही नशीला रस डाल मेरे आगे किया। कोकिल की कूक ने, पपीहे की पी पी ने वही मधुर गुंजार का कलश मेरे कानों में उँडेल दिया है।

आम का बोर महक उठा। करने की कली चटक पड़ी। सबने एक स्वर में कहा-यह रस इन्द्र के लिए है-इन्द्रियों के स्वामी के लिए। यह अनमोल भेंट आत्म संयम का पुरस्कार है। संसार का राज्य इन्द्रियों के राजा के लिए है। सबसे बड़ा राज्य स्वराज्य है। अपने तन तथा मन का राज्य!

प्रभो! क्या मैं सचमुच इन्द्र हूँ? सच्चे इन्द्र तो तुम्हीं हो और इस विश्व पर राज्य भी तुम्हारा है। मैं इन्द्रपुत्र हूँ। इसी से संसार मुझे इन्द्र कहता है। पुत्र की लाज पिता को है। बुरा हूँ, भला हूँ तुम्हारा हूँ।

तो हे परमपिता! तुम मुझे अपना बना ही लो। तुम बड़े इन्द्र हो। मुझे छोटा, आंशिक, एकदेशी इन्द्र ही बना दो। मैं भी तुम्हारे राज्य का उपभोग करूँ। क्या यह सम्पूर्ण सोमरस, पत्ती-पत्ती से छलक रहा सोमरस, अकारथ जाएगा? और नहीं, अपने सोम की सफलता ही के लिए मुझे इस का पात्र बना दो। मेरा हृदय छलका दो, मेरे मुख से यह नशीली प्याली लगा दो, लगा दो! लगा दो!!

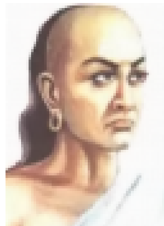

चला लक्ष्मीश्चलाः
प्राणाश्चलं जीवितयौवनम्।
चलाचले हि संसारे
सत्यमेकं हि निश्चलम्।।२०।।

धन दौलत, प्राण, यौवन और जीवन ये सब चलते रहने वाले हैं। धन आज किसी के पास है कल नहीं रहेगा। यही स्थिति धन, प्राण और वुचावस्था की है। यह संसार परिवर्तनशील है। केवल सत्य ही स्थिर है। भाव यह है कि मनुष्य को सत्य आचरण अवश्य ही करना चाहिए।

नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।
चतुष्पदांश्रृगालस्तु स्त्रीणां धूर्ता च मालिनी।।२१

मनुष्यों में नाई स्वभाव से ही चतुर होता है। पक्षियों में कौवा चतुर होता है। चौपायों में गीदड़ और स्त्रियों में मालिनी स्त्री सबसे चतुर होती है।

चाणक्य-नीति

(यह लेखक का अपना मत हो सकता है। केवल जन्म के आधार पर किसी का चतुर, धूर्त या मूर्ख होना तर्कपूर्ण नहीं प्रतीत होता-सं०)

षष्ठः अध्याय

श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्।।१।

अच्छा श्रोता होना भी एक बड़ा गुण है। विद्वान् महात्माओं की बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर उन पर मनन और आचरण करने से मनुष्य धर्म का ज्ञान प्राप्त कर सता है और दुष्ट आचरण का त्याग कर सकता है। श्रेष्ठ शास्त्रज्ञान को सुनकर ज्ञान प्राप्त कर लेता है और सुनने से (श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार) मोक्ष की प्राप्ति भी हो जाती है।

अमृत वचनावली

नदी सागरतां याति ग्रावा हीरकतां यथा।
नूनमीश्वरतां याति तल्लीनो मानवस्तथा।।९३

नदी सागर में गिरकर सागर बन जाती है। और जैसे कोयला कालान्तर में हीरा बन जाता है। उसी प्रकार मनुष्य ध्यान का सतत् अभ्यास करने से परमात्मा के आनन्दस्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

मलपूर्णं गृहं दृष्ट्वा जायते मुखविकृतिः।
मलपूर्णं मनो दृष्ट्वा परमात्मा न नन्दति।।९४।

जिस प्रकार हम किसी के घर पर जाएँ, वहाँ कूड़ा कर्कट पड़ा हो तो हम मुंह सिकोड़ लेते हैं, ठीक उसी प्रकार यदि हमारे अन्दर विकार भरे हुए हों तो हम परमात्मा की कृपा को प्राप्त करने के अधिकारी नहीं होते।

प्रीतिशातकम्

❑**डॉ० रामभक्त लांगायन**
आई ए एस (सेवानिवृत्त)

जपस्तु सुकरः पुंसां पार्थना त्वतिदुष्करा।
जपेनानन्दितो लोकः लोकेशः प्रार्थनाप्रियः।।९५

जप करना मुश्किल नहीं है, जप की अपेक्षा प्रार्थना करना कठिन है। जप से लोग खुश हो सकते हैं, लेकिन परमात्मा तो प्रार्थना से ही खुश हो सकता है।

चिकित्सा सुतरां कार्या रोगं ज्ञात्वा निदानतः।
मनसो विक्रियां बुद्ध्वा वशीकरणमाचरेत्।।९६

जिस प्रकार रोग के ठीक निदान होने से उसका इलाज आसानी से हो सकता है, उसी प्रकार जो मनुष्य मन की बिमारी को जान लेता है और होश में आ जाता है, वह परम शांति को प्राप्त करता है।

सीख हम सीखें युगों से

❒सहदेव समर्पित

उपदेश का प्रभाव

एक बार स्वामी दर्शनानन्द जी का दिल्ली में उपदेश हो रहा था।

यह घटना सदर बाजार और पहाड़ी धीरज के बीच की है जहाँ आजकल बारह टूटी चौक है। पास में हाफिज बन्ना की सराय थी जहाँ दूर-दूर के यात्री अपनी बैलगाड़ियाँ खड़ी करते थे। सायं का समय था। लोग स्वामी जी का उपदेश ध्यान से सुन रहे थे। उपदेश का विषय था- कर्म और फल। स्वामी जी ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। कर्म के फल को टाला नहीं जा सकता और न ही किसी और के कर्म के फल को कोई दूसरा भोग सकता। उपदेश सुनने वालों में रोहतक देहात से आए हुए तीन व्यक्ति भी उपस्थित थे। भाषण के बाद वे तीनों व्यक्ति स्वामी जी के पास पहुंचे और कहा कि बाबाजी हम आपसे एकान्त में कुछ बात करना चाहते हैं। वे तीनों स्वामी जी को पास के जंगल में ले गए। स्वामी जी को उन के बारे में कुछ शंका होने लगी पर तभी वे तीनों जमीन पर बैठ गए और स्वामी जी के बैठने के लिए चादर बिछा दी। उन्होंने स्वामी जी से आज के उपदेश के बारे में अपने कुछ प्रश्न कहे और उनके उत्तर प्राप्त करके बहुत संतुष्ट हुए।

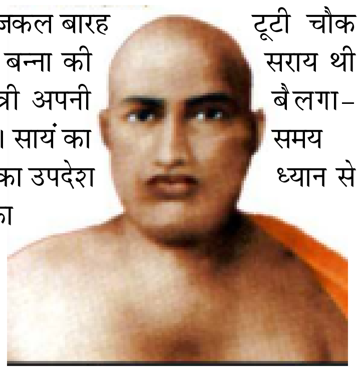

इसके बाद एक ने गंभीर होकर पूरी बात बताई- 'स्वामी जी हम तीनों डाकू हैं। हम देहली में डाका डालने आए थे। परन्तु आपके उपदेश से हमारा हृदय परिवर्तन हो गया है। आज से हम यह काम छोड़ रहे हैं।' उन्होंने स्वामी जी का बहुत आदर सत्कार किया और उन्हें उनके ठहरने के स्थान पर छोड़ गए।

ये तीनों व्यक्ति उस दिन से पूरी तरह बदल गए। ये आर्यसमाज में शामिल हो गये और इन्होंने समाज सेवा के बड़े-बड़े कार्य किये। इनमें से एक थे चौधरी पीरू सिंह, जिन्होंने अपने गांव मटिण्डु में अपनी तीस बीघे भूमि दान देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल की स्थापना कराई। दूसरे व्यक्ति थे फरमाणा गांव के लाला इच्छाराम, जिनके सुपुत्र हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार और प्रो० रामसिंह जी आर्य समाज के नेता और विद्वान् बने। तीसरे थे- फरमाणा गांव के ही चौ० जुगलाल जैलदार, जो अपनी वीरता, निर्भीकता व समाज-सुधार के कार्यों के कारण बहुत प्रसिद्ध हुए।

यह वह समय था जब उपदेश देने वाले भी सच्चे होते थे और उपदेश ग्रहण करने वाले भी। आज उपदेश करने वाले हजारों हैं और सुनने वाले लाखों! पर उनमें से शायद ही किसी का जीवन इस तरह बदलता हो, जिस तरह इन तीनों का बदल गया।

(पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी (पूर्व सांसद) द्वारा लिखित विवरण के आधार पर)

छोटे भाई का त्याग

सरदार बल्लभ भाई पटेल का जन्म १८७५ ईस्वी में हुआ। १८९३ में विवाह हुआ और १८९७ में मैट्रिक परीक्षा पास की।

उनकी इच्छा थी कि वे ऊँची शिक्षा प्राप्त करें। उनका सपना बैरिस्टर बनने का था। बैरिस्टर बनने के लिए इंगलैंड जाना पड़ता था। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। आगे की पढ़ाई संभव नहीं लग रही थी। उन्होंने मुख्त्यारी की परीक्षा पास की और गोधरा की कचहरी में मुख्त्यारी करने लगे। इंग्लैण्ड जाने का संकल्प--! कम से कम खर्च करके आय का एक भाग बचाते जाते और इंग्लैंड ले जाने वाली कंपनी से पत्र व्यवहार भी चलता रहा।

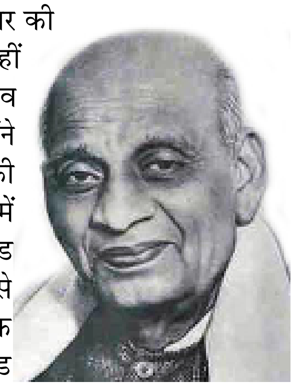

कंपनी का अन्तिम पत्र बड़े भाई बिट्ठल के हाथ लग गया। उन्हें पूरी बात का पता चल गया। बिट्ठल का सपना भी इंगलेंड जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का था। दोनों में पहले आप, पहले आप की तीखी बहस हुई। आखिर बड़े भाई के इंग्लैंड जाने का फैसला हुआ।

यह एक विचित्र संयोग था कि बड़े भाई की पढ़ाई का खर्च छोटा भाई उठा रहा था।

वल्लभ भाई को स्वयं १९१० में इंगलैंड जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने बैरिस्टरी प्रथम श्रेणी में पास की और गुजरात के नामी वकील बने।

जयन्ती २३ जनवरी

बोस का पत्र : माता के नाम

प्रस्तुतकर्ता : डॉ० संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी

देश की स्वतंत्रता के लिए नेताजी का बहुत बड़ा योगदान था। खेद की बात है कि स्वतंत्रता के बाद उनको भुला दिया गया। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' की कहावत को चरितार्थ करता यह पत्र उन्होंने १५ वर्ष की आयु में अपनी मातेश्वरी को लिखा था। नेताजी के बारे में स्तरीय जानकारी देने वाली पुस्तक 'एक भारतीय तीर्थयात्री' (शंकर सहाय सक्सेना) से उद्धृत यह विचारोत्तेजक पत्र आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, पारिवारिक व वैयक्तिक ही नहीं मातृभूमि के दायित्त्व बोध को भी उभारता है। पाठकों से निवेदन है कि जहाँ कहीं भी बंगाली शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ भारतीय पढ़ें व आत्मसात् करें। –प्रस्तुतकर्त्ता

कटक–रविवार

परम पूजनीय मातेश्वरी के चरण कमलों में सादर।

मैंने काफी समय हो गया आपको पत्र नहीं लिखा। आज, मुझे कुछ अवकाश है इसलिए मैं अपने को तथा अपनी लेखनी को आपको कुछ पंक्तियाँ लिखने का गौरव प्रदान करना चाहता हूँ।

समय–समय पर मेरे मन में विचार उसी प्रकार उमड़ते रहते हैं जिस प्रकार बाग में पुष्प खिलते हैं और मैं उन्हें तुम्हारे चरणों में अपने हृदय के भावना सुमन के रूप में चढ़ाता हूँ। परन्तु मैं थोड़ा अधीर हो उठता हूँ क्योंकि मेरे पास यह जानने का कोई साधन नहीं है कि वे सुगंधित पुष्पों की भाँति तनिक भी संतोष की अनुभूति देते हैं अथवा वे आपके मन को अपनी कड़वाहट से भर देते हैं। मैं नहीं जानता कि मेरे मन के आकाश में कुसमय के बादल के समान जो एक के बाद दूसरा विचार उठता रहता है मैं किस पर व्यक्त करूँ। इसलिए मैं उन विचारों को आपके पास भेज देता हूँ। मैं यह जानकर प्रसन्न होऊँगा कि वे आपको कैसे लगते हैं। वे आपको प्रसन्न करते हों या न करते हों परन्तु मैं तो केवल उनकी ही भेंट आपको अर्पित कर सकता हूँ। क्योंकि वे मेरे हृदय से निकलने वाली भेंट हैं।

माँ! आपकी सम्मति में हमारी शिक्षा का क्या उद्देश्य है? आप हम पर इतना धन व्यय करती हैं। आप हमें स्कूल में प्रातः मोटर कार से भेजती हैं और सायंकाल मोटर से ही घर बुलाती हैं और हमें दिन में चार–पाँच बार अच्छा स्वादिष्ट भोजन देती हैं। हमारे लिए अच्छे वस्त्रों का प्रबन्ध करती हैं और हमारे लिए नौकर रखती हैं। मैं सोचता हूँ कि यह सब झंझट, संघर्ष और प्रयत्न किसलिए आप कर रहीं हैं। इसका आखिरकार उद्देश्य क्या है? मैं यह समझने में असमर्थ हूँ। अपनी शिक्षा समाप्त करके हम अपने कार्यशील जीवन में प्रवेश करेंगे और फिर हम शेष जीवन में बोझ ढोने वाले पशुओं के समान परिश्रम करते रहेंगे और उसके बाद इस पृथ्वी से कूच कर जावेंगे। माँ, हम कौन सा कार्य करें जो आपकी सबसे अधिक प्रसन्नता का कारण बने। जब हम बड़े हो जायँ तो हम किस प्रकार का कार्य करें जिसे आप पसन्द करें। मैं नहीं जानता कि आपकी हम लोगों के बारे में क्या इच्छा है। मैं नहीं जानता कि यदि हम जज, मैजिस्ट्रेट, बैरिस्टर अथवा उच्च राजकर्मचारी बनें, अथवा दुनिया के लोगों की नजरों में अपने धन के लिए प्रशंसित हों, अथवा हमारे पास बहुत अधिक धन, मोटरकार, घोड़े इत्यादि हों, हमारी सेवा में नौकरों की एक लम्बी पंक्ति हो, भव्य भवन हों तथा बड़ी–बड़ी जमींदारियाँ हों तब आपको सबसे अधिक प्रसन्नता होगी अथवा यदि हम बड़े होकर 'वास्तविक मनुष्य' बनें और विद्वान तथा ऊँचे चरित्र के व्यक्ति का आदर प्राप्त करें फिर चाहे हम निर्धन ही क्यों न रहें। उससे आप प्रसन्न होंगी? मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हूँ कि आप अपने पुत्र का क्या बनना पसन्द करेंगी। दयालु भगवान ने हमें यह जीवन, स्वस्थ शरीर, बुद्धि और शक्ति दी है जो सभी अत्यन्त मूल्यवान हैं परन्तु क्यों? उसने हमें यह सब कुछ इसलिए दिया है कि हम उसकी पूजा और अर्चना करें तथा उसका काम करें। परन्तु माँ, क्या हम उसका कार्य करते हैं। यह अत्यन्त खेद की बात

है कि हम दिन में एक बार भी सम्पूर्ण हृदय से उसकी प्रार्थना नहीं करते, हम कभी भी उसे नहीं पुकारते यद्यपि वह हमारे लिए इतना अधिक कर रहा है। जो हमारी समृद्धि और कठिनाई में सदैव हमारा हितू रहता है, घर में अथवा सुनसान में जो हमारी रक्षा करता है जो हमेशा हमारे हृदय में रहता है, जो हमारे बहुत नजदीक है और जो हमारा है हम उसको कभी याद नहीं करते। हम महत्वहीन सांसारिक वस्तुओं के लिए रोते हैं, किन्तु भगवान के लिए हमारी आँखों में एक भी आँसू नहीं है। माँ! क्या हम पशुओं से भी अधिक कृतघ्न और हृदयहीन नहीं हैं? इस ईश्वर विहीन शिक्षा को धिक्कार है। जो प्रभु के यशोगान नहीं करता उसका जन्म व्यर्थ है। कोई भी नदी अथवा तालाब से जल पीकर अपनी प्यास बुझा सकता है परन्तु आध्यात्मिक प्यास बुझा सकना क्या इतना सरल है? नहीं, आध्यात्मिक प्यास का बुझा सकना कभी भी सम्भव नहीं हो सकता। यही कारण है कि हमारे ऋषियों ने कहा है:- 'ऐ अज्ञानी मनुष्य उसकी शरण जाओ, उसको पूर्ण आत्मसमर्पण कर दो।'

इस युग में भगवान ने कुछ नई चीजें पैदा की हैं, कुछ ऐसी चीजें जो पहले के युगों में नहीं थीं। यह नई ईजाद बाबू लोगों की है। हम लोग इस बाबू जाति के हैं। भगवान ने हमें दो टाँगें दी हैं लेकिन हम ४० या ४५ मील चल नहीं सकते क्योंकि हम लोग बाबू हैं। हमारे पास अत्यन्त मूल्यवान दो हाथ हैं, परन्तु हम शारीरिक परिश्रम से घृणा करते हैं हम अपने हाथों का उचित प्रयोग नहीं करते क्योंकि हम बाबू हैं। भगवान ने हमें अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य दिया है किन्तु हम शारीरिक श्रम को नीची जाति के लोगों का काम मानते हैं क्योंकि हम बाबू वर्ग के हैं। सभी कामों के लिए हम नौकरों को पुकारते हैं- हमें अपने हाथ पैर हिलाने में कठिनाई होती है क्योंकि आखिरकार हम लोग बाबू हैं। हम ठण्ड से इतना घबड़ाते हैं कि हम भारी से भारी रजाई से तथा अन्य कपडों से अपने को ढकते हैं क्योंकि हम लोग बाबू हैं। हम लोग सभी जगह अपनी बाबूगीरी का प्रदर्शन करते हैं जैसे कि अन्ततः हम बाबू हैं। वास्तव में मनुष्य के स्वरूप में हम लोग पशु हैं जिनमें कोई भी मानवीय गुण नहीं है। हम पशुओं से भी गिरे हुए हैं क्योंकि हम में बुद्धि है जो पशुओं में नहीं होती। जन्म से ही विलासिता और आराम में पले होने के कारण हममें कठिनाई का सामना करने की क्षमता बिलकुल भी नहीं रह गई है। यही कारण है कि हम अपनी इन्द्रियों के स्वामी नहीं बन सकते। हम अपने जीवन भर अपनी इन्द्रियों के दास बने रहते हैं और जीवन हमारे लिए एक भार बन जाता है। मैं बहुधा सोचता हूँ कि बंगाली लोग पूर्ण पुरुषत्व को कब प्राप्त करेंगे। वे अपनी द्रव्य सम्बन्धी निर्बलता पर कब विजय प्राप्त करेंगे और जीवन के ऊँचे मूल्यों का ध्यान करेंगे। वे सभी बातों में अपने पैरों पर खड़े होना कब सीखेंगे, वे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए कब प्रयत्न करना शुरू करेंगे? वे कब अन्य राष्ट्रों की तरह स्वाबलम्बी बनेंगे और अपने पूर्ण पुरुषत्व की कब घोषणा करेंगे? मुझे यह देखकर आन्तरिक गहरी पीड़ा होती है कि पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से बहुत से बंगाली अपने धर्म को छोड़कर नास्तिक बन जाते हैं। मुझे यह देखकर अत्यन्त निराशा होती है कि आज के बंगाली प्रदर्शन तथा विलासिता के जीवन की ओर बढ़ते जा रहे हैं और अपने चरित्र को तिलांजलि दे रहे हैं। कैसे दु:ख की बात है कि बंगाली लोग अपनी राष्ट्रीय वेशभूषा को आज घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। मुझे यह देखकर बहुत चोट लगती है कि बंगालियों में आजकल बहुत कम स्वस्थ बलवान और तेजवान व्यक्ति दिखलाई पड़ते हैं और उससे भी अधिक खेद की बात यह है कि बहुत थोड़े बंगाली ऐसे हैं जो प्रतिदिन भगवान की प्रार्थना करना अपना दैनिक कर्तव्य मानते हैं। माँ इससे अधिक पीड़ा की बात क्या हो सकती है कि आज बंगाली लोग आरामतलब, संकुचित मनोवृत्ति वाले, चरित्रहीन, दूसरों के मामले में रूचि लेने वाले व हस्तक्षेप करने वाले तथा ईर्ष्यालु हैं।

हम लोगों को अब शिक्षा दी जा रही है, यदि उसका लक्ष्य केवल नौकरी और द्रव्य है तो हम उस शिक्षा के और हमारे पुरुषार्थ के योग्य कैसे बन सकते हैं? माँ! क्या बंगाली कभी स्वत्व प्राप्त कर सकेंगे, तुम्हारी क्या सम्मति है? माँ, हमारा राष्ट्र पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। हमारी रक्षा कौन करेगा? हमारी रक्षक केवल बंगाल की माताएँ ही हो सकती हैं। यदि बंगाली माताएँ अपने पुत्रों का बिलकुल नए ढंग से पालन-पोषण करें और बड़ा करें तो पुन: एक बार बंगाली अपने पौरुष को प्राप्त कर सकते हैं।

हम लोग सकुशल हैं। मैंने छोटे दादा को पत्र लिखा है। पिताजी सोमवार को गोपालीपालन जावेंगे। कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें। मैंने इस पत्र में बहुत सी बेकार बातें लिखी हैं। यदि आपको उनको पढ़ने में कष्ट हो तो पत्र को फाड़ दीजिए और मुझे क्षमा कर दीजिए।

आपका आज्ञाकारी पुत्र- **सुभाष**

प्रस्तुतकर्ता संपर्क
-जवाहर नवोदय विद्यालय,
खुंगा-कोठी, जींद-१२६११० हरियाणा
santoshgaurrashtrapremi@gmail.com
चलभाष : ९९९६३८८१६९

वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले दो ऋषि

सतयुग में मनु और कलियुग में दयानन्द

❑डॉ॰ भवानी लाल भारतीय, ३/५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

यों तो ईश्वर-प्रदत्त वेदों के प्रति अगाध निष्ठा और श्रद्धा आदिकाल के ऋषियों से लेकर स्वामी विवेकानन्द पर्यन्त धर्माचार्यों, दार्शनिकों तथा ऋषि मुनियों ने दिखाई है, उनकी सर्वोपरि प्रामाणिकता को भी स्वीकार किया है तथापि वेद के महत्त्व तथा मानवी जीवन में उनके मार्गदर्शन को जितनी निष्ठा और प्रामाणिकता के साथ सतयुग में महर्षि मनु तथा कलियुग में ऋषि दयानन्द ने दर्शाई है, वह बेमिसाल है, अनन्य है तथा अतुलनीय है। श्रुति के पश्चात् प्रामाणिक धर्मशास्त्रों में सर्वोपरि नाम मनु प्रणीत मनुस्मृति का है। सभी आचार्यों का मत है कि स्मृति ग्रंथों में मनु रचित स्मृति अथवा 'मानव धर्म शास्त्र' का सर्वोच्च स्थान है। मनु के टीकाकार कुल्लूक के अनुसार मनु के विपरीत अन्यों के कथन का कोई महत्त्व नहीं है।

मनुस्मृति में यथाप्रसंग वेदों की प्रामाणिकता तथा उनके सर्वोपरि महत्त्व को जिस उदात्त शैली में व्यक्त किया गया है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। मनु की स्पष्ट घोषणा है-वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।। (१/६३) सारे धर्मों अर्थात् कर्त्तव्य-कर्मों का विधिविधान वेद है। उनके पश्चात् ही स्मृति ग्रंथों, सत्पुरुषों के आचरण तथा अपनी आत्मा की सन्तुष्टि को प्रमाण माना जा सकता है। इसलिए अगले श्लोक में मनु आदेश देते हैं-अतः विद्वान् को चाहिए- श्रुति प्रामाण्यतो विद्वान् स्वधर्मे निविशेत वै।। (१/६४) इन सभी तथ्यों पर विचार कर विद्वान पुरुष को चाहिए कि वह श्रुति प्रमाण को प्रधानता देकर स्वधर्म का आचरण करे। मनु की सम्मति में श्रुतियों और तदनुकूल स्मृति में प्रोक्त धर्म के आचरण से मनुष्य इस जन्म में कीर्ति तथा परलोक में सर्वोत्तम सुख प्राप्त करता है-

श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुविष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।।(१/६५)

इसके पश्चात् मनु यह स्पष्ट करते हैं कि श्रुति से वेदों का अभिप्राय लेना चाहिए और स्मृति से धर्मशास्त्रों का आशय है- श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। (१/६६) मनु चेतावनी देते हैं कि जो व्यक्ति व्यर्थ के तर्कशास्त्र का आश्रय लेकर वेदों की अवमानना करता है, उसे साधु लोग (सत्पुरुष) अपने समाज से बाहर कर दें क्योंकि वेद का निन्दक नास्तिक है-

नास्तिको वेदनिन्दकः।। (१/६७)

प्रथम अध्याय के ६८वें श्लोक में जहां धर्म के चार लक्षण बताये गये हैं; वहाँ वेदों को इनकी प्रामाणिकता में प्रथम स्थान दिया गया है-

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

यही चार धर्म के साक्षात् लक्षण हैं। इनका क्रम इस प्रकार है-१ वेद २ स्मृति ३ सदाचार ४ स्वात्मा के ज्ञान के अविरुद्ध।

अगले ही श्लोक में धर्म जिज्ञासुओं के लिए श्रुति (वेद) को परम प्रमाण माना गया है-

धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः (१/६९)

इस प्रकार महर्षि मनु ने शास्त्रसमुदाय में वेदों की सर्वोच्चता तथा सर्वाधिक प्रमाणत्व की ही घोषणा नहीं की, यह भी बताया कि वेद समस्त ज्ञान विज्ञान के आदि स्रोत हैं। समस्त भौतिक और आध्यात्मिक रहस्यों का मूल वेदों में तलाशा जा सकता है। उनका मत था-

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारकामा पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिद्ध्यति।।

चातुर्वर्ण्य की सामाजिक व्यवस्था, तीनों लोकों में घटने वाले क्रिया-कलाप तथा मानव जीवन का चार आश्रमों में विभाजन, जो हो चुका है, हो रहा है और भविष्य में होने वाला है, यह सब वेदों से ही ज्ञात होता है। उन्होंने विभिन्न शासन व्यवस्थाओं और दण्ड विधानों का मूल भी वेद को ही ठहराया-

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।। (१२/१००)

सेनापति का युद्ध कौशल, राजा की शासन एवं

दण्ड व्यवस्था, समाज का नेतृत्व, यहाँ तक कि सर्व लोकों के अधिपति बनने की व्यवस्था वेदशास्त्रों के ज्ञाता पुरुष के द्वारा ही होती है। यही कारण है कि उन्होंने वेदों की उपयोगिता समाज के सभी लोगों के लिए स्वीकार की। चाहे देवकोटि के मनुष्य हों या हमारे पालक पिता तुल्य पितृगण अथवा सामान्य मानव, वेद सबको मार्ग दिखलाने वाले सनातन चक्षु हैं। इनकी सर्वोच्चता तथा शास्त्रों में सर्वोपरि, प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है।

मनु के वेदों के प्रति प्रशस्तिमूलक उद्गारों की संक्षिप्त चर्चा करने के पश्चात् हम देखें कि उनके बाद में कलियुग में एकमेव ऋषि दयानन्द भी वे आचार्य थे जिन्होंने मनु के सुर में सुर मिलाते हुए वेदों की सर्वोपरि प्रामाणिकता तथा सर्वोच्च स्थिति को स्वीकार किया। उनका यह भी मत था कि वेद विषयक उनका यह मत कोई उनका स्व आविष्कृत सिद्धान्त नहीं है किन्तु महाभारत काल के पूर्व के तथा उसके पश्चात्वर्ती सभी आचार्यों, दार्शनिकों तथा शास्त्र विवेचकों ने वेदों की सर्वोपरि मान्यता को स्वीकार किया है। ऋषि दयानन्द के वेद विषयक विचार यों तो उनके सभी ग्रंथों में यत्र तत्र मिलते हैं, विशेष रूप से उन्होंने स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में तथा सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में इस विषय की विशद् चर्चा की है। वेदों के नित्यत्व का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने पातञ्जल महाभाष्य, जैमिनीय मीमांसा, कणाद कृत वैशेषिक दर्शन, पातञ्जल योगदर्शन, सांख्यदर्शन (कपिल कृत) तथा बादरायण प्रणीत वेदान्त दर्शन को उद्धृत किया है।

यों तो महाभारत के परवर्ती शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ, रामानन्द आदि सभी दार्शनिकों, सम्प्रदाय प्रवर्त्तकों तथा आचार्यों ने वेदों के प्रति निष्ठा को यत्र तत्र प्रकट किया है, किन्तु देखने की बात यह है कि वे वेद प्रमाण को व्यावहारिक धरातल पर नहीं ला पाये। वेदों के प्रति उनकी श्रद्धा मात्र मौखिक या औपचारिक ही है। कारण? कि उनका वेद अध्ययन बराय नाम ही था, या यों कहें कि उन्होंने वेदों का गहन अध्ययन किया ही नहीं था।

वेदों का सर्वविद्यामयत्व प्रतिपादित करते हुए ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि इनमें विज्ञान, कर्म, उपासना तथा ज्ञान का विवेचन है। वे इनमें विज्ञान को सर्वप्रमुख मानते हैं। दयानन्द के अनुसार विज्ञान आज के 'साइन्स' से कहीं अधिक ख्याति वाला है। उनका कथन है कि परमेश्वर से आरम्भ कर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध ही सच्चा विज्ञान है। इनमें भी वे ईश्वर के अनुभव को मुख्य मानते हैं। उनकी मान्यता है कि समस्त वेदों में ईश्वर को ही सर्व पदार्थ समूह में प्रधानता दी गई है।

जब ऋषि दयानन्द ने वेदों में विज्ञान की स्थिति बताई तो पाश्चात्य विद्वानों (प्रो० मैक्समूलर तथा अन्य) तथा कतिपय भारतीय विद्वानों (यथा- पं० बलदेव उपाध्याय लिखित सायण कृत वेदभाष्य भूमिकाओं के सम्पादित संस्करण की भूमिका) ने इस मान्यता का उपहास किया। उनका कहना था कि वेदों में रेल, तार तथा स्टीम ऐंजिन आदि की अब स्थिति बताना हास्यास्पद है। सच्चाई यह है कि वे ऋषि दयानन्द की एतद् विषयक मूल भावना को ही नहीं समझें। यों प्रत्यक्ष देखें तो क्या अथर्ववेद में आयुर्वेद, औषधि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान, सैन्य विधा, शासन व्यवस्था, कामशास्त्र आदि के सैकड़ों विषय वर्णित नहीं हैं? सायण आदि भाष्यकारों की अपव्याख्याओं के कारण तथा अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र का आधार लेने के कारण अथर्ववेद के समीक्षकों ने इस विज्ञान प्रधान वेद को जादू, टोना, अभिचार, तंत्र, मंत्र आदि का स्रोत बताया, किन्तु यदि वेद की व्याख्या को उन्होंने दयानन्द की पद्धति से किया होता तो वे सत्यार्थ के अधिक निकट होते।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में दयानन्द ने वेदविषयक विवेचन को निम्न शीर्षकों में बांटा है-'वेद का नित्यत्व और ईश्वर कर्तृत्व'। वे वेद में मीमांसा में मान्य अपौरुषेयत्व तथा नैयायिक के उसे पौरुषेय (परम पुरुष परमात्मा प्रणीत होने) बताने में कोई विरोध नहीं मानते। मीमांसा का वेदों को अपौरुषेय बताना यदि निगेटिव कथन है तो नैयायिकों का परम पुरुष परमात्मा द्वारा रचित बताना पॉजिटिव कथन है। दोनों का आशय एक ही है। इस समुल्लास में स्वामी जी ने वेदविषयक अन्य विषय लिये हैं- **वेदों का चार ऋषियों की आत्माओं में आविर्भाव, वेदोल्लिखित ऋषियों का मंत्र-द्रष्टा होना न कि वेदों का रचयिता होना, मंत्र भाग और ब्राह्मण का पार्थक्य, शाखाओं का वेदों की व्याख्या होना न कि स्वयं वेद होना आदि।**

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तो समग्रतः वेद विवेचन को ही समर्पित है। इसके सभी सत्तावन प्रकरण वेदविषयक विभिन्न प्रश्नों का विवेचन तथा तदुत्पन्न शंकाओं एवं प्रश्नों का समाधान करते हैं। इनमें कुछ अध्याय तो वेदों के सर्वविद्यामयत्व को स्थापित करते हैं। ब्रह्मविद्या, सृष्टि विद्या, उपासना विषय, मुक्ति विषय आदि वेदों में अध्यात्मविद्या के सूचक हैं तो नौविमान विद्या, तार विद्या, वैद्यक, विवाहादि सामाजिक धर्म, राजा-प्रजा धर्म, वर्णाश्रम विषय आदि वेदों के लौकिक पक्ष को उजागर करते हैं।

निश्चय ही कलियुग में ऋषि दयानन्द वेदों के गौरव को प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम आचार्य हैं।

प्रत्येक बच्चे को
मानवजाति की सेवा के लिए तैयार करें!

❑डॉ॰ जगदीश गाँधी,
संस्थापक-प्रबन्धक,
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

❍विश्व के किसी भी एक बच्चे की शक्ल और उसके अंगूठे की छाप किसी दूसरे बच्चे से कभी नहीं मिलती है। **ईश्वर ने प्रत्येक बच्चे को अलग एवं विशिष्ट बनाया है।** ये बच्चे अपनी अलग-अलग प्रतिभा एवं विशेषता के कारण अपने चुने हुए कार्यक्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बन सकते हैं। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि हम इनके अंदर छिपी हुई ईश्वरीय प्रतिभा एवं विशिष्ट गुणों को विकसित करें और उन्हें अपने चुने हुए क्षेत्र में जाने के लिए सर्वश्रेष्ठ शिक्षा व वातावरण उपलब्ध करायें। इसके लिए **हमें उन्हें सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा तो उपलब्ध करानी ही है इसके साथ ही हमें उन्हें ईश्वर की शिक्षाओं से भी जोड़ना होगा।** उनके व्यक्तित्व में मानवीय गुणों को भरना होगा। ईश्वर से जुड़कर वे पूरी शिद्दत के साथ सारी मानवजाति की सेवा के लिए प्रयास करने पर अवश्य ही सफल होंगे। उनके रास्ते में कठिनाई आ सकती है किन्तु यदि वे ईश्वर से जुड़े हुए हैं और आप अपनी पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ प्रयास कर रहे हैं तो वे अवश्य ही सफल होंगे। परमात्मा से जुड़ने पर बच्चे महसूस करेंगे कि परमात्मा सदा उनकी रक्षा व सहायता करता है।

❍बच्चे ही सारे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना कर सकते हैं। यदि उन्हें संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा दी जाए। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति एवं शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित **नेल्सन मंडेला** ने कहा भी है कि **'शिक्षा ही वह शक्तिशाली हथियार है जिसके माध्यम से सारे विश्व की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाया जा सकता है।''** इस प्रकार सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के सर्वश्रेष्ठ ढांचे में ढलकर **बच्चे ही विश्व में सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं।** सभी बच्चे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना चाहते हैं। कोई भी बालक बम का निर्माण नहीं चाहता है। हमारा शरीर भौतिक है। ऐसे में अगर हमारे बच्चों का चिंतन भी भौतिक हो गया तो वे पशु बन जायेंगे। इसलिए हमें अपने बच्चों के चिंतन को आध्यात्मिक बनाना है। तभी वे संतुलित प्राणी बन पायेंगे। तभी वे ईश्वर का उपहार एवं मानवजाति का गौरव बन सकेंगे। तभी वे विश्व का प्रकाश बन सकेंगे। इसके लिए हमें अपने बच्चों को भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान करके उन्हें गुड और स्मार्ट दोनों बनाना है।

> 'हमें प्रत्येक बच्चे को सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देकर उनके दृष्टिकोण को विश्वव्यापी बनाना होगा। उन्हें विश्व नागरिक के रूप में विकसित करना होगा।'

> ईश्वर की शिक्षाओं को जानें, उनको समझें और उनकी गहराईयों में जायें और फिर उन शिक्षाओं पर चलें। यही ईश्वर की सच्ची पूजा है और यही हमारी आत्मा का पिता 'परमपिता परमात्मा' हमसे चाहता भी है।

❍बच्चों को अपने जीवन का लक्ष्य स्वयं निर्धारित करना चाहिए। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में विचारों का सबसे बड़ा योगदान होता है। किसी भी व्यक्ति के जैसे विचार होते हैं वैसे ही वह बन जाता है। यदि हम ऊँचा सोचेंगे तो हम ऊँचा बन जायेंगे। इसलिए हमें अपने बच्चों को सर्वश्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की शिक्षा देकर उनके विचारों को हमेशा ऊँचा बनाये रखते हुए उन्हें सर्वश्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा देनी चाहिए। इतिहास गवाह है कि किसी भी महापुरुष ने किसी भी दूसरे महापुरुष का अन्धानुकरण नहीं किया। सभी महापुरुषों ने अपना-अपना रास्ता स्वयं बनाया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहना है कि **हमें**

दूसरे महापुरुषों के विचारों से प्रेरणा तो अवश्य लेना चाहिए किन्तु हमें अपना रास्ता स्वयं निर्धारित करना चाहिए। इसलिए हमें अपना आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि हमें क्या करना है? अपने शुद्ध एवं पवित्र हृदय के कारण ही **प्रत्येक बालक विश्व का प्रकाश है।** इसलिए हमारे बच्चों के जीवन का उद्देश्य भी परमपिता परमात्मा की तरह ही सारी मानवजाति का कल्याण होना चाहिए।

❍हमारे शरीर का पिता अपने बच्चों के बीच प्रेम, दया, सद्भाव और एकता चाहता है। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा भी अपने सारे बच्चों के बीच एकता चाहता है। इस सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माणकर्ता होने के कारण वह विश्व की सम्पूर्ण मानवजाति में एकता चाहता है। हमारे शरीर के पिता अस्थाई हैं किन्तु हमारी आत्मा के पिता स्थाई हैं। **हमारे बच्चे अपने जीवन में वह सब पा सकते हैं जो वे चाहते हैं। यदि हमारे बच्चों के विचार में यह बात आ जाये कि वे उस शक्तिशाली परमपिता परमात्मा के पुत्र हैं** जिन्होंने इस सारी सृष्टि का निर्माण किया है, तो वे अपनी पूरी शिद्दत के साथ सम्पूर्ण विश्व की मानवजाति की भलाई के लिए काम करेगें।

❍हमारा व हमारे बच्चों का यह संकल्प होना चाहिए कि हम अपने शरीर के पिता के द्वारा बनाये गये घर के साथ ही अपनी आत्मा के पिता के द्वारा बनाई गई इस सारी सृष्टि को भी सुन्दर बनायेंगे। यही एक अच्छे पुत्र की पहचान भी है। कोई भी पिता अपने उस पुत्र को ज्यादा प्रेम करता है जो कि उसकी बातों को मानता है, सबसे प्रेम करता है, आपसी सद्भावना पैदा करता है, एकता को बढ़ावा देता है। परमात्मा अपने ऐसे ही पुत्रों को सबसे ज्यादा प्रेम करता है जो उसकी शिक्षाओं पर चलकर उनकी बनाई हुई सारी सृष्टि को सुन्दर बनाने का काम करते हैं। परमपिता परमात्मा की बनाई हुई इस सारी सृष्टि में ही हमारे शरीर के पिता ने ४ या ६ कमरों का एक छोटा सा मकान बनाया है। हमें इस ४ या ६ कमरों में रहने वाले अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ ही परमपिता परमात्मा द्वारा बनाई गई इस सारी सृष्टि में रहने वाली मानवजाति से भी प्रेम करना चाहिए। तभी हमारे शरीर के पिता के साथ ही हमारी आत्मा के पिता भी हमसे खुश रहेंगे।

❍ईश्वर की शिक्षाओं को जानें, उनको समझें और उनकी गहराईयों में जायें और फिर उन शिक्षाओं पर चलें। यही ईश्वर की सच्ची पूजा है और यही हमारी आत्मा का पिता 'परमपिता परमात्मा' हमसे चाहता भी है। शरीर चाहे अवतार का हो या संत-महात्माओं का हो, माता-पिता का हो, भाई-बहन का हो या किसी और का हो, यहीं पर रह जाता है। जब तक आत्मा शरीर में है तभी तक यह शरीर काम करता है। **परमात्मा ने अपनी आज्ञाओं के पालन के लिए हमें यह शरीर दिया है।** परमात्मा हमसे कहता है कि तेरी आँखें मेरा भरोसा हैं। तेरा कान मेरी वाणी को सुनने के लिए है। तेरे हाथ अच्छे कर्म करने के लिए हैं। तेरा जो हृदय है मेरे गुणों को धारण करने के लिए है। इस प्रकार परमात्मा ने हमें शरीर अपने काम के लिए अर्थात् ईश्वर को जानने के लिए तथा उसकी पूजा करने अर्थात् उन शिक्षाओं पर चलकर अपना कल्याण करने के लिए दिया है।

❍हमें अपने बच्चों के दृष्टिकोण को विश्वव्यापी बनाने के साथ ही साथ उन्हें सारे विश्व की मानवजाति की सेवा के लिए तैयार करना चाहिए। वास्तव में बच्चे संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन में सब कुछ पा सकते हैं। **इसलिए बच्चों को चाहिए कि वे अपने चुने हुए कार्यक्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनें।** वे विश्व के सबसे महान व्यक्ति बनें। वे जिस भी क्षेत्र में जायें, सबसे ऊपर रहें। डिसीजन मेकर बनें और पूरे विश्व को ध्यान में रखते हुए ही कोई निर्णय बनायें और उसे लागू करें। वे सारी मानवजाति की सेवा के लिए सारे विश्व का प्रधानमंत्री बनें। सारे विश्व का राष्ट्रपति बनें। सारे विश्व का स्वास्थ्य मंत्री बनें। इसके लिए हमें प्रत्येक बच्चे को सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देकर उनके दृष्टिकोण को विश्वव्यापी बनाना होगा। उन्हें विश्व नागरिक के रूप में विकसित करना होगा।

❍हमें प्रत्येक बच्चे को सारे विश्व की मानवजाति की सेवा के लिए तैयार करना है। हमें उन्हें समझाना है कि हम केवल अपने कार्यों में ही न लगे रहें। हम न केवल अपने राष्ट्रहित के कार्यों में ही लगे रहें बल्कि हमें दुनिया के ७ अरब २० करोड़ लोगों की भलाई के लिए काम करना है। हमें अपने बच्चों के माध्यम से सारे विश्व में परिवर्तन लाना है।

परिवार को आपस में बांधने वाले बंधन आनन्दों के नहीं, अपितु कर्त्तव्यों के होते हैं। पारिवारिक जीवन के भी अपने आनन्द होते हैं उनकी कमी नहीं है। परन्तु उन आनन्दों का मूल स्रोत कर्त्तव्यपरायणता होती है। कर्त्तव्य मुख्य और आनन्द गौण होता है।

–पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

वे डाकू या लुटेरे नहीं थे

❑राजेशार्य आट्टा ११६६, कच्चा किला, साढौरा यमुनानगर-१३३२०४

प्रिय पाठकवृन्द! हमारे इतिहास का कटु सत्य है कि स्वतंत्रता के बाद जो हमारे शीर्ष नेता बने, स्वतंत्रता का सारा इतिहास जिनके नाम हो गया, वे लोग क्रांतिवीरों का विरोध कर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों की सहायता करते रहे और दिग्भ्रमित हुई अनपढ़ जनता मातृभूमि के मतवालों को अपना दुश्मन मानती रही। केवल यही नहीं कि जनता ने क्रांति कारियों की सहायता नहीं की, अपितु कई बार तो जनता ने ही मातृभूमि के लाडलों को मारने में अंग्रेजों का साथ दिया। फिर भी वे मतवाले इसे (जनता को) भारत माता मानकर इसकी मुक्ति के लिए प्राणों की आहुति देते रहे।

अंग्रेजों से लड़ने के लिए इन्हें हथियारों की आवश्यकता थी और हथियारों के लिए धन की। धन इनके पास था ही नहीं, खुले रूप में चंदा मांग नहीं सकते थे। बहुत से धनी लोग अंग्रेजों के भक्त थे। अतः लाचार होकर इन्हें कई बार डाकुओं जैसा कार्य करना पड़ा, जिसके अन्तर्गत सरकारी खजाने व अंग्रेजों के सहयोगी लूटे गये। पर यह सत्य है कि ये डाकू या लुटेरे नहीं थे और इनका उद्देश्य किसी को लूटकर मौजमस्ती करना नहीं था।

भगतसिंह ने करतार सिंह सराभा के विषय में लिखा है कि एक बार उनके नेतृत्व में डकैती डाली गई। गाँव के जिस घर में डकैती डाली, उसमें एक बेहद खूबसूरत लड़की भी थी। उसे देखकर एक पापी आत्मा का मन डोल गया। उसने जबरदस्ती लड़की का हाथ पकड़ लिया। लड़की ने घबराकर शोर मचा दिया। करतार सिंह एकदम रिवॉल्वर तानकर उसके नजदीक पहुँच गए और उस आदमी के माथे पर पिस्तौल रखकर उसे निहत्था कर दिया और कड़ककर बोले-'पापी! तेरा अपराध बहुत गंभीर है। तुम्हें सजा ए मौत मिलनी चाहिए लेकिन हालात की मजबूरी से तुम्हें माफ किया जाता है। फौरन इस लड़की और इसकी माँ के पैर छूकर माफी मांग। यदि वे तुम्हें माफ कर दें, तो तुम्हें जिंदा छोड़ दिया जायेगा वरना गोली से उड़ा दिया जाएगा।' उसने ऐसा ही किया। हैरान हुई माँ ने इनका उद्देश्य जानकर कहा- 'इस लड़की की शादी करनी है। इसके लिए कुछ छोड़ जाओ तो अच्छा है।' करतार सिंह ने अपना सारा धन माँ के सामने रखकर कहा- 'जितना चाहें ले लें।' कुछ पैसा रखकर माँ ने बाकी करतार सिंह की झोली में डाल दिया और आशीर्वाद दिया- 'जाओ बेटा, तुम्हें सफलता मिले।'

एक बार रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में किसी गाँव के मुखिया घर डाका डाला गया। बिस्मिल दरवाजे पर रुक गये। उन्होंने दल के लोगों को पहले ही निर्देश दे दिया था कि दल के किसी भी व्यक्ति को घर की महिलाओं से छेड़खानी नहीं करनी है। यदि महिलायें हमला करें, तो भी उन पर आक्रमण नहीं करना है, बल्कि उनके हमले को बर्दास्त करना है।

बाकी सदस्यों ने घर के अन्दर जाकर सभी पुरुषों को डराकर घर से निकाल दिया। महिलाएँ इनके आदर्श वादी सिद्धांत को समझ गईं और दो औरतों ने चन्द्रशेखर आजाद व मन्मथ नाथ गुप्त की पिस्तौल छीन लीं व इन्हें पीटने लगीं। गुप्त जी ने तो अपना पिस्तौल किसी तरह वापिस छीन लिया, पर आजाद उस महिला से अपना रिवाल्वर वापिस न ले पाये। तब तक गाँव के लोगों ने बाहर रामप्रसाद बिस्मिल को घेर लिया। बिस्मिल ने परिस्थिति बिगड़ते देख दल के सदस्यों को भागने का संकेत किया। डाके में कुछ नहीं मिला, एक पिस्तौल भी गंवा बैठे।

धन की कमी के कारण संगठन के सभी कार्य ठप्प थे। आजाद इसी चिंता में रहते थे। एक दिन उनके किसी पुराने परिचित ने इनकी चिन्ता दूर करते हुए कहा कि 'पास के गांव में एक सेठ रहता है। उसके नौकर मेरे परिचित हैं। उसके घर डाका डालो और पार्टी का काम चलाओ।' आजाद तुरन्त सहमत हो गये।

उसी रात दल के सदस्यों ने सेठ के यहां डाका डाल दिया। यहां से काफी पैसा हाथ लगा। दल के सभी सदस्य लूट में लगे थे, तभी आजाद ने देखा कि दल का एक सदस्य सेठ के परिवार की एक सुन्दर युवती से छेड़छाड़ कर रहा था। युवती लज्जा और डर से काँप रही थी। आजाद ने उसे डाँटा। यह वही था, जिसने डाका डालने का सुझाव दिया था। आजाद ने अपनी पिस्तौल निकाली और उस दुश्चरित्र व्यक्ति को वहीं ढेर कर दिया। फिर उन्होंने युवती से माफी गांगी और बिना एक पैसा लिए ही वहाँ से वापिस चले आये। ऐसे 'डाकुओं' पर लाखों 'महात्मा' न्यौछावर किये जा सकते

थे, पर भीड़ में इतना विवेक कहाँ?

कलकत्ता के अत्याचारी चीफ प्रैसीडेंसी मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड के न्यायालय में २६ अगस्त १९०७ को क्रांतिकारियों की पेशी पर दर्शकों की भारी भीड़ थी। मजिस्ट्रेट के आदेश पर पुलिस ने भीड़ को बाहर निकालने के लिए डंडे बरसाने शुरू कर दिए। एक अंग्रेज सार्जेन्ट बड़े उत्साह से डंडे चला रहा था। १५-१६ वर्ष का किशोर सुशील कुमार सेन इस अत्याचार को सहन न कर सका। उसने जोश में आगे बढ़कर अंग्रेज सार्जेण्ट का डण्डा पकड़ लिया और लात-घूसों से अंग्रेज की पिटाई कर दी।

मजिस्ट्रेट ने सुशील कुमार को १० बेंतों की सजा दी जो बाद में १५ बेंत की कर दी। यहीं से वह पक्का क्रांतिकारी बन गया। अरविन्द घोष की अनुशीलन समिति का सदस्य बन क्रांति का पाठ पढ़ा। क्रांति कार्य के लिए धन की समस्या थी। अतः डाके डाले। २८ अप्रैल १९१५ को सुशील कुमार ने अपने दल के साथ नदिया जिले में प्रागपुर की पुलिस चौकी पर धावा बोला और वहां से कुछ हथियार छीनकर नावों में बैठ भागे। पुलिस ने उनका पीछा किया और सब ओर खबर फैला दी कि कुछ डकैत डाका डालकर फरार हो गये हैं। सभी उन्हें पकड़ने में पुलिस की सहायता करें। बहुत से लोग इकट्ठे हो गये।

सुशील और उसके साथी किसी गांव से बाहर उजड़ी हुई गोशाला में खाना बना रहे थे, किसी ग्रामीण ने उन्हें वहां देख लिया और गाँव जाकर पुलिस को वहाँ बुला लाया। आमना- सामना होते ही गोलियाँ चलने लगीं। एक गोली सुशील के पेट में लगी, जिससे वह गिर पड़ा। क्रांतिकारियों ने जैसे तैसे उन्हें एक नाव में डाला और तेजी से नाव खेने लगे। होश आने पर सुशील ने साथियों से कहा-'मैं बचूँगा नहीं, तुम मेरी चिन्ता छोड़कर भाग जाओ।' साथी सहमत नहीं हुए, तब नेता ने दृढ़ता से कहा- 'मेरा सिर धड़ से अलग करके साथ ले जाओ। केवल धड़ से वे कुछ पहचान न सकेंगे।'

साथियों में इस नृशंस कार्य को करने की हिम्मत न देख सुशील सेन ने दृढ़ता से आदेश दिया। साथियों ने बड़ी अनिच्छा से इस क्रूर धर्म का पालन किया। उन्होंने सिर काटकर पत्थर से बाँधकर नदी में डुबा दिया। पुलिस को नाव में केवल धड़ ही मिला, जिसकी कोई पहचान नहीं हो सकी।

बंगाली वीर यतीन्द्रनाथ मुखर्जी किशोरावस्था में अपनी खुखरी से खूंखार बाघ को मारकर बाघा जतीन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपने स्वाभिमानी व निडर स्वभाव के कारण सरकारी नौकरी होते हुए भी उद्दण्ड अंग्रेज अफसरों को पीटकर क्रांति-पथ पर चल पड़े। 'अनुशीलन समिति' के सम्पर्क में आये और अलग से 'बान्धव समिति' दल खड़ा कर दिया। १९१० ई० में कलकत्ता में क्रांतिकारियों को पकड़वाने या यातना देने वाला गुप्तचर विभाग का उप अधीक्षक था- शम्सुल हक। २४ जनवरी १९१० को यतीन्द्रनाथ के दल ने उसे मौत के घाट उतार दिया। यतीन्द्रनाथ को गिरफ्तार कर लिया गया, पर गवाह के अभाव में छोड़ दिये गये। साथ ही नौकरी से भी हटा दिया गया। अब उनके सामने क्रांति का पथ प्रशस्त था। रास बिहारी बोस जैसे क्रांतिकारी के सम्पर्क में आये और शस्त्र व धन के लिए राजनीतिक डाके डालना तय किया।

कोलकाता की 'रोड़ा ऐंड कम्पनी' के हथियारों की एक बैलगाड़ी क्रांतिकारियों ने हथिया ली, जिसमें ५० माउजर पिस्तौलें और ४० हजार कारतूस उनके हाथ लगे। यह बहुत बड़ी सफलता थी। तीन डकैतियों में उन्हें काफी धन राशि भी प्राप्त हो गई। २४ फरवरी १९१५ को बेलियाघाट की डकैती हुए अभी दो ही दिन हुए थे कि कलकत्ते के एक मकान में अपने साथियों के साथ पिस्तौलें साफ करते हुए इन्हें एक व्यक्ति ने, जिस पर ये लोग शक करते थे, पहचान लिया। उसका जीवित वापस लौट जाना क्रांति दल के लिए विनाश कारी होता, अतः यतीन्द्रनाथ के आदेश से चितप्रिय ने उसे गोली मार दी और ये भाग लिये। नीरद हलदार ने मरते समय यतीन्द्रनाथ को ही अपनी हत्या का अपराधी बताया।

साथियों ने यतीन्द्रनाथ को विदेश जाने की सलाह दी, पर उस वीर ने कहा- 'जिनके साथ जीवन मरण में साथ देने की शपथ लेकर हमने घर छोड़ा है, उन साथियों को विपत्ति के मुंह में छोड़कर विदेश जाने की बात मैं सोच भी नहीं सकता। यदि मैं देश के शत्रुओं से लड़ते-लड़ते मारा जाऊँ, तो उससे अच्छा तो और कुछ हो ही नहीं सकता।'

बाघा जतीन को पकड़ने के लिए अब पुलिस ने कमर कस ली। ९ सितम्बर १९१५ को पुलिस बालासोर में उनके ठिकाने पर पहुँची, पर वे चकमा देकर निकल गये। गांव के लोगों को पुलिस ने समझा दिया कि एक भयंकर डकैतों का दल उनके इलाके में छिपा हुआ है, उन्हें पकडने अथवा पकड़वा देने पर खूब इनाम दिया जाएगा।

पिछले दो दिन से बाघा जतीन को खाना व सोना कुछ भी नसीब न हुआ था। दिन दोपहर की धूप में उन्हें ग्राम, नदी, नाले पार करके चलना पड़ रहा था। राह में नदी पार होते समय प्राण-रक्षा के लिए माझी से थोड़ा सा भात मांगा, पर जाति की रुढ़िता में बंधा होने के कारण वह देने के लिए तैयार नहीं हुआ। पुलिस पीछे पड़ी थी। अपने चार साथियों के साथ जतीन बालेश्वर के निकट एक जंगल में चले गये। गाँव वालों के साथ पुलिस ने इन्हें घेर लिया। शचीन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है-

'एक ओर प्रायः हजार से अधिक गाँव वाले, 'डाकू पकड़े जा रहे हैं', यह समझकर, हथियारबन्द पुलिस का साथ दे रहे थे- दूसरी ओर थे केवल पांच

विप्लवी! इस प्रकार प्रबल शत्रुओं के मुकाबले में थके-माँदे, भूखे-प्यासे पांच आदमी कब तक युद्ध कर पाते? विप्लवियों की गोलियां भी खत्म होने को आईं। वे सभी घायल हो गये थे। किन्तु घायल होने पर भी उन्होंने हथियार नहीं रखे। इतने में एक घातक गोली आकर चितप्रिय को अमर-धाम ले गई। अन्त में उन्होंने यतीन्द्रनाथ के आग्रहपूर्ण अनुरोध से आत्मसमर्पण कर दिया।'

यतीन्द्रनाथ का शरीर बहुत खून गिरने से अवसन्न होकर गिर पड़ा। उन्होंने अगले दिन कटक के अस्पताल में प्राण त्याग दिये। मनोरंजन और नीरेन्द्र को फांसी हुई। ज्योतिष को आजीवन काले पानी की सजा मिली। अण्डमान जेल की यातनाओं से ये पागल हो गये। बाद में इन्हें बहरामपुर के पागलखाने में रखा गया और वहीं से स्वर्गवासी हो गये।

पं० काशीराम धन कमाने अमेरिका गये थे, पर भारतीय स्वाधीनता पार्टी की पुकार सुनकर स्वदेश लौट गये। १८५७ जैसे 'गदर' की सम्भावना से अंग्रेज सरकार सचेत हो गई थी। कलकत्ता पहुंचने पर इनका गोलियों से स्वागत हुआ, जिसमें इनके कई साथी शहीद हो गये, कई गिरफ्तार हो गये और काशीराम जैसे कुछ बचकर पंजाब पहुँच गये। २५ नवम्बर १९१४ को अपने गांव पहुँचकर काशीराम ने गदर के विषय में व्याख्यान दिया। जो बन्दूकें, पिस्तौल और कारतूस खरीदकर जहाजों द्वारा भारत भेजे गये थे, वे प्रायः सभी सरकार ने बीच में ही पकड़ लिये थे। नये हथियार खरीदने के लिए धन की आवश्यकता थी। इसके लिए सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनी। उसी को कार्यान्वित करने के लिए २७ नवम्बर को १५ पुरुषों की टोली मोगा शहर में फिरोजपुर वाली नहर के पुल की ओर चली। रास्ते में पुलिस से झड़प हो गई, जिसमें टोली के एक आदमी ने थानेदार पर गोली चला दी। जैलदार पर भी गोली चलाई गई। दोनों घायल होकर गिर पड़े। बाकी सिपाही डर कर भाग खड़े हुए। उन्होंने गाँव में जाकर शोर मचा दिया कि डाकुओं ने थानेदार और जैलदार को मार दिया है।

गाँव के लोग जो भी हथियार हाथ लगा, उठाकर डाकुओं को पकड़ने के लिए दौड़े। इतनी बड़ी भीड़ का सामना करना क्रान्तिकारियों के बस का नहीं था। उनमें से कुछ तो भाग गये और ९ व्यक्तियों ने सरकंडों की ऊँची घास में छिपने का प्रयत्न किया। गाँव वालों ने अपनी बन्दूकों से गोलियाँ चलाईं, जिनसे एक क्रान्तिकारी चन्दरसिंह मारा गया; एक घायल हो गया; बाकी सात पकड़े गये। ये थे पं० काशीराम, ध्यान सिंह, जगत सिंह, लाल सिंह, बख्शीश सिंह, जीवन सिंह और रहमत अली शाह। इन पर मुकदमा चला। १३ फरवरी १९१५ को सातों को फाँसी की सजा सुनाई गई। उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

नवम्बर १९२८ के चाँद फाँसी अंक में पं० काशीराम के विषय में लिखा है- 'जिनके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व कौड़ी के समान लुटा दिया और जिनके दु:खों से कातर हो, रोती हुई वृद्धा माता की इकलौती गोद को सूनी कर उन्होंने संन्यासी का वेष धारण किया था, उन्हीं गाँव वालों ने उनके फाँसी हो जाने पर यह कहकर खुशी मनाई कि सरकार बहादुर ने डाकुओं को फाँसी पर चढ़ाकर हम पर बड़ा एहसान किया।'

जिला अमृतसर के क्रान्तिवीर सोहन लाल पाठक डी०ए०वी० स्कूल लाहौर में अध्यापक लगे, तो महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय के रंग में रंग गये। घर में पुत्र के जन्म के एक सप्ताह बाद धर्मपत्नी और बालक दोनों का स्वर्गवास हो गया। बूढ़े पिता व विधवा बहन को भगवान भरोसे छोड़कर ये विदेशों में घूमते हुए अमेरिका में लाला हरदयाल के पास जा पहुँचे और गदर आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए। उपनिवेशवाद और उसके दुष्प्रभाव के विरुद्ध उनके ओजस्वी तर्कों और भाषणों की सब जगह प्रशंसा हुई। हांगकांग में उनके जादुई भाषण से श्री बिशन सिंह नामक व्यक्ति इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने क्रान्तिकारियों के जर्जर साधनों को सुदृढ़ करने तथा शस्त्र खरीदने के लिए एक लाख बीस हजार रुपए दे दिये।

गदर पार्टी के विशेष गुप्तचर के रूप में उन्हें १९१५ में बर्मा में भेजा गया। बर्मा में नियुक्त ब्रिटिश सेना तथा भारतीय सैनिकों के साथ उन्होंने गुप्त रूप से वार्तालाप किया। सभी खतरों को वीरता से पार करते हुए वे एक सैनिक कैम्प से दूसरे कैम्प में गए। अंत में वे मेम्यो में नियुक्त सबसे महत्वपूर्ण माउटेन बैटरी में गए और भारतीय सैनिकों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया।

उस बैटरी (टुकड़ी) के एक स्वामीभक्त जमादार ने उन्हें पकड़ लिया और दूसरे सैनिकों को आवाज दी, जो क्षण भर में वहाँ पहुँच गए। सोहनलाल आसानी से इस जमादार को गोली मार सकते थे, क्योंकि उनके पास तीन स्वचलित पिस्तौल और २७० कारतूस थे, परन्तु वे भारतीय के खून से अपना हाथ नहीं रंगना चाहते थे। बाद में तलाशी लेने पर उनके पास से दो कागज लाला हरदयाल का लेख व बम का फार्मूला भी मिले। सोहन लाल को माण्डले जेल में डाल दिया गया और १० फरवरी १९१६ को फाँसी दे दी गई।

फाँसी से पूर्व अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने सोहन लाल पाठक से माफी माँग लेने का अनुरोध किया तो भारत माँ के निर्भीक पुजारी ने कहा-''मैं माफी क्यों माँगू, जिन अंग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया है, हमें अत्याचार की चक्की में पीसा है, उनसे माफी किस बात की? माफी तो उन्हें हमसे माँगनी चाहिए।''

डी०ए०वी० विद्यालय का एक विद्यार्थी व गदर पार्टी का सक्रिय सदस्य था सरदार बन्ता सिंह, जिसे पंजाब का

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

कहानी

साधक और साधना

❑**रामफल सिंह आर्य,** ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

आश्विन मास का शुक्लपक्ष था। वर्षाकाल के समाप्त होने पर पूर्णतः स्वच्छ एवं निर्मल आकाश में चन्द्रमा की चन्द्रिका की छटा अपने पूर्ण यौवन पर है। जितना चमकीला दिन होता है उससे अधिक चमकीली रात्रि भी होती है जो सबको एक अवर्णनीय आह्लाद से परिपूर्ण कर देती है। यह ऋतु प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर पृथक्-२ भाव जगाती है। प्रेमियों के लिये ये रात्रियाँ प्रेमाग्नि को भड़काने का कार्य करती हैं और काटे नहीं कटती। रह-२ कर अपने प्रेमी की याद तड़पते हृदय को मानो और भी आहत कर जाती है। चोरों के लिये चोरी का अवसर आन पहुंचता है क्योंकि चन्द्रमा की चांदनी में भागने के सारे मार्ग खुले होते हैं। कवियों की कल्पना की उड़ान उनकी लेखनी के माध्यम से कागज पर चित्रित हो जन-जन के भीतर जा उनके स्वरों में अवतरित हो जाती है। कामियों की तो गाथा ही मत पूछो। वैद्य लोगों के लिये यह समय बड़ा उपयुक्त है। कई प्रकार की औषधियां चन्द्रमा की चांदनी में ही तैयार होती हैं। विशेष रूप से हृदय रोग एवं श्वास की ओषधियां रात्रि को ही तैयार की जाती हैं। उन्मत्त लोगों के लिये चन्द्रमा की चांदनी बड़ी कष्टदायी होती है। पूर्णिमा के दिन तो उनका पागलपन बहुत अधिक बढ़ जाता है। वर्षा ऋतु का अन्त एवं शरद् का आगमन मन में विचित्र आकर्षण उत्पन्न कर देता है।

रात्रि में चन्द्रमा की नीलिमा युक्त ज्योत्स्ना में मुदित मन से आश्रम के प्रांगण में भ्रमण करते हुए आचार्य व्यास देव बड़ी प्रसन्नता से बार-२ आकाश की ओर निहार कर प्रभु की रचना पर मुग्ध हो रहे थे। आस-पास के पेड़ों के झुरमुटों के बीच से चलते हुए वे एकाएक रुक गये। पेड़ों से छन कर चन्द्रमा की किरणें भूमि पर अपनी आभा फैला रही थीं। कहीं-२ पेड़ों की छाया और कहीं-२ चन्द्रमा का प्रकाश। बहुत ही अद्भुत, चित्ताकर्षक एवं मनोहर दृश्य था, मानो जीवन का दर्शन ही धरा पर उतर आया था। अन्धकार और प्रकाश का संगम मानो सुख एवं दु:ख, जीवन एवं मृत्यु, सत्य एवं असत्य, जागरण एवं स्वप्न, मिलन एवं वियोग-- सब कुछ तो इसमें समाया है। रात्रि की शान्त पवित्र एवं आनन्दमयी इस वेला में केवल झींगुरों का सामूहिक गान सुनाई देता था। कभी-२ किसी निशाचर पक्षी का स्वर भी कानों में पड़ जाता था। आश्रम से निचली और बहते पर्वतीय झरने का मधुर आलाप तो वातावरण में मानो मिश्री घोल रहा था। प्रकृति नटी के इस मनमोहक नृत्य में आचार्य जी पूर्णरूपेण खो गये और पेड़ों के बीच में एक चट्टान पर आसन बिछा कर ध्यानमग्न हो गये। थोड़ी ही देर में वे ईश्वर के आनन्द में मग्न हो मुस्कुराने लगे। एक दिव्य आभा चक्र उनके मुखमण्डल के चारों ओर प्रतीत होने लगा। चन्द्रमा की चांदनी में तो उनका मुखमण्डल और भी चमक उठा। आचार्य जी जब कभी इस प्रकार से ध्यानावस्थित होते थे तो कोई भी उन्हें उठाता नहीं था। वे स्वयं ही, जब उन्हें उचित प्रतीत होता, उठ कर अपने कक्ष में आ विराजते थे।

आचार्य व्यासदेव जी एक उच्चकोटि के साधक थे। अनेक योग्य गुरुओं से उन्होंने योग के गूढ़ रहस्यों को सीखा था और वेदादि ग्रन्थों का अनेक बार पारायण भी किया था। वे समय-२ पर अपने आश्रम में साधना शिविरों का आयोजन भी करते रहते थे, जिनमें अनेक लोग साधना का लाभ उठाते एवं अपनी शंकाओं का समाधान करते थे। आश्रम में केवल कुछ सीमित व्यक्ति ही निवास करते थे जिनमें दो तो खेती का कार्य देखने वाले, एक गौ शाला का गो-सेवक एवं एक पाचक और एक प्रबन्धक था। अन्न एवं धन का कोई अभाव आश्रम में न था। श्रद्धालु लोग प्रचुर मात्रा में दान आश्रम को समय-२ पर देते रहते थे तथा विशेष अवसरों पर विशेष दान भी देते थे। आचार्य जी प्रायः कहीं भी आते जाते न थे। बहुत आवश्यकता पड़ने पर ही वे यात्रा करते थे अन्यथा साधना में ही लीन रहते थे। अनेक साधु-सन्तों का आना जाना भी आश्रम में लगा रहता था, परन्तु आचार्य जी की अपनी दिनचर्या नियत थी। उसमें किसी प्रकार की भी बाधा वे न आने देते थे। इस क्षेत्र के लोग भी आचार्य

> इन्द्रदत्त संभल कर पुनः बोला, "आचार्य जी! यह कदम तो मैंने उस समय भावावेश में ही उठाया था, परन्तु अब मेरे लिये एक चुनौती बन गया है--

जी का बड़ा मान सम्मान करते थे। और प्रत्येक रविवार को सत्संग में आश्रम में आते थे।

आज भी आचार्य जी ने लगभग दो अढ़ाई घण्टे तक ईश्वर के आनन्द में डुबकी लगाई और फिर धीरे से उठ कर अपने कक्ष में विश्राम करने चले गये। इस समय रात के लगभग बारह बज रहे थे। चन्द्रमा बिल्कुल सिर के ऊपर आ चुका था और पेड़ों से होकर आती किरणें अत्यन्त सुन्दर दृश्य उपस्थित कर रही थीं। रात का शान्त वातावरण अति रमणीय बन चुका था।

प्रातः काल उठ कर नित्य कर्मों से निवृत्त हो आचार्य जी पुनः साधना में लीन हो गये। उसके उपरान्त प्रातः कालीन यज्ञ हुआ और सब लोगों ने एक साथ प्रातः राश ग्रहण किया। उसके पश्चात् सब लोग अपने-२ कार्यों में लग गये। आज रविवार होने के कारण आश्रम में दोपहर को भी सत्संग का कार्यक्रम होता था जिसमें गांव के लोग पर्याप्त संख्या में भाग लेते थे। इन्हीं लोगों के साथ एक व्यक्ति और आ गया जो कि अति साधारण वस्त्रों में था और चेहरे पर दाढ़ी भी कुछ बढ़ी हुई थी।

आचार्य जी ने बोलना प्रारम्भ किया, "देवियो और सज्जनो! परमपिता परमेश्वर इस सृष्टि के कण-२ में विद्यमान है। वह समस्त जगत का उत्पन्न करने वाला एवं उसका संचालन करने वाला भी है। प्रभु अपने पुत्रों पर सदा आनन्द की वृष्टि करने वाला है परन्तु उसका आनन्द मिलता उसी को है जो उसकी आज्ञाओं को मान कर प्राणीमात्र के उपकार के लिये कार्य करता है। संसार में कोई भी मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं है। सबके भीतर उस प्रभु का ही वास है। संसार के सारे सुख, ज्ञान, बल, बुद्धि एवं ऐश्वर्य प्रभु के पास हैं। परन्तु दुःख यह है कि वे हमें मिलते नहीं हैं क्योंकि हम कभी प्रभु के पास बैठने का यत्न नहीं करते। याद रखो! यदि हम सुख चाहते हैं तो निश्चय ही सुख के भण्डार के पास जाना होगा और वह भण्डार कहीं और नहीं अपितु हम सभी के अन्दर विद्यमान है। हम प्रायः ईश्वर को भूल कर सांसारिक पदार्थों में सुख को ढूंढते फिरते हैं परन्तु संसार के पदार्थों में दुःख मिश्रित सुख है जो थोड़ी देर में समाप्त हो जाता है। स्थायी सुख तो केवल ईश्वर के पास है। आओ हम प्रभु की ओर चलें।" इसके उपरान्त कुछ काल के लिये सभी ने सामूहिक साधना की।

साधना के उपरान्त गांव वाले तो चले गये परन्तु नवागन्तुक महोदय आचार्यजी से मिलने आये और

आचार्यजी ने निश्चय किया कि वे प्रति माह उन्हें कुछ सहायता दिया करेंगे और अपना कुछ समय उन अनाथ बच्चों के साथ बिताया करेगें।

अभिवादनोपरान्त उनके समीप बैठ गये। आचार्य जी ने अतिथि से पूछा, "आप कौन हैं और कहां से आये हैं?" अतिथि ने कहा, "मेरा नाम इन्द्रदत्त है और मैं गुजरात से आया हूं। मुझे कुछ ध ान की आवश्यकता थी और यहां कुछ लोगों ने मुझे सहायता का आश्वासन दिया था इसलिये यहां पर आया था।" "सहायता? किस प्रकार की सहायता? आप क्या कोई धार्मिक कार्य करते हैं या कोई संस्था चलाते है?" आचार्य जी ने पूछा। इन्द्रदत्त बोला, "आचार्य जी! कई वर्ष पूर्व जब गुजरात में भूकम्प आया था तो उसमें हजारों लोग मारे गये थे। स्वयं हमारे घर में मेरे भाई एवं भाभी नहीं बचे तथा उनके दो बच्चे अनाथ हो गये। मेरे दो बच्चे थे वे भी भूकम्प की भेंट चढ़ गये। हमारे नगर में ही कहीं माता पिता मारे गये तो कहीं बच्चे मारे गये और कहीं-२ तो पूरा का पूरा परिवार नष्ट हो गया। मैनें अपनी

कई वर्ष पूर्व जब गुजरात में भूकम्प आया था तो उसमें हजारों लोग मारे गये थे। स्वयं हमारे घर में मेरे भाई एवं भाभी नहीं बचे तथा उनके दो बच्चे अनाथ हो गये। मेरे दो बच्चे थे वे भी भूकम्प की भेंट चढ़ गये।

सामर्थ्य के अनुसार नगर के लगभग पन्द्रह बच्चों को अपना लिया। मेरे मन में यह विचार आया कि यदि हमारे बच्चों की अपेक्षा हम मारे जाते तो उनकी क्या दशा होती? वे कहां भटकते फिरते? कौन उनका पालन पोषण करता? यह स्थिति तो किसी के साथ भी हो सकती थी। जब ईश्वर की कृपा से मैं जीवित बच गया तो क्या मेरा यह कर्त्तव्य नहीं बनता कि मैं अनाथ बच्चों को अपना लूं और उनकी सहायता करने का प्रयास करूं। मैं भला अपने सामने रोते बिलखते, भूखे एवं असहाय बच्चों को कैसे देख सकता था। इसलिये जितना प्रबन्ध मेरे पास था और मैं जितनी व्यवस्था कर सकता था, उतने बच्चों को मैंने रख लिया। माता-पिता की कमी को भला कौन पूरा कर सकता है, परन्तु फिर भी मैंने उनकी हर प्रकार से देखभाल करने का दायित्व उठाया। उन बच्चों की भोली भाली छवि में मुझे अपने बच्चों की छवि ही दिखाई देती है।" कहते-२

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

वेद स्वाध्याय

तीन प्रकार के बंधन

❑राज कुकरेजा,
786/8 अर्बन एस्टेट करनाल-132001
raj.kukreja.om@gmail.com

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

ऋग्वेद 1-24-15

पाश दु:खदाई होते हैं और व्रत के नियम आत्मोत्थान में सहायक इस मन्त्र में तीन पाशों का वर्णन है और इन तीनों से साधक मुक्त होने की ईश्वर से प्रार्थना करता है। तीनों पाशों की व्याख्या विद्वानों ने अपने स्तर से अलग-अलग की है। ये पाश उत्तम, अधम और मध्यम हैं। ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने अधम को निकृष्ट, मध्यम को निकृष्ट से कुछ विशेष और उत्तम को अति दृढ़, अत्यंत दु:ख देने वाले बताया है। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने इन पाशों को क्लेश=अविद्या भावार्थ किया है। कई विद्वानों ने पाश को मनुष्य की ऐषणाओं के भाव में भी लिया है। विद्वानों की कहने व लिखने की शैली भिन्न-भिन्न हो सकती है, परन्तु भाव सबका एक ही है। श्रोता अथवा पाठक इन भावार्थों को अपनी बुद्धि के स्तर से ग्रहण करता है, जो भाव समझने में सरल व सुगम हो, उसे ग्रहण कर हृदयंगम कर लेता है। वेदवाणी पत्रिका में एक विद्वान ने इस मन्त्र का भावार्थ करते हुए समझाया कि ऐषणा ही पाश है।

बुद्धि के स्तर पर इस बात को समझना थोड़ा कठिन लगा कि इन पाशों का वर्गीकरण उत्तम, अधम और मध्यम क्यों किया गया है। पाश अर्थात् बंधन तो सदैव दु:खदाई होता है। बंधा हुआ चाहे सोने की जंजीर से है या लोहे की जंजीर से, बंधन तो बंधन ही होता है। मन्त्र में उत्तम, अधम और मध्यम कहा गया है तो रहस्य तो छिपा ही हुआ है। यदि हम तीन पाशों को व तीन ऐषणाओं को एक साथ जोड़ने और समझने का प्रयास करें तो रहस्य की ग्रन्थि खुलने लगती है।

इन तीनों पाशों में से प्रत्येक पाश बंधन में बाँधने में सक्षम है। जो तीनों से जकड़ा हुआ है, उसकी शोचनीय अवस्था का क्या कहना?

आज हम स्वयं पर, समाज पर, राष्ट्र पर दृष्टिपात करें तो हम सभी इन पाशों में जकड़े हुए हैं और ये पाश उत्तम, अधम और मध्यम के वर्गों में स्थापित होते हैं। उत्तम पाश क्या हैं? इस को हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि व्यक्ति जब उत्तम कर्म करते हुए लोकैषणा से ग्रस्त होता है तो यह उत्तम पाश है। ज्ञान का क्षेत्र सबसे उत्तम माना गया है। शरीर में ज्ञान का स्थान मस्तिष्क है और शरीर का यह भाग उत्तम माना गया है। व्यक्ति थोड़ा ज्ञान प्राप्त करता है तो उस के साथ अहम भाव को जोड़ लेता है, मन में टीस सी होती रहती है कि उसे ज्ञानी समझा जाये। इस प्रकार अन्य जन भी जिस-जिस कार्य क्षेत्र में उत्तम कर्म करने की भावना से उतरते हैं, स्वयं को लोकैषणा के बंधन में बाँधने लग जाते हैं। परोपकार का कार्य करने वाला परोपकारी, धर्म का कार्य करने वाला धार्मिक, दान देने वाला दानी, समाज सेवा करने वाला समाज सेवक इत्यादि उपाधियों से स्वयं को विभूषित करना चाहता है और सदैव प्रयत्नशील रहता है कि समाज में उसे प्रतिष्ठा मिले और समाज में सम्मानित किये जाएँ। कार्य तो उत्तम कर रहे हैं परन्तु लोकैषणा के कारण बंधन में बंध जाते हैं। यह उत्तम पाश है।

अधम पाश अर्थात् निकृष्ट पाश को शरीर के निम्न भाग से लिया गया है। शरीर के प्रति आसक्ति, संसार के प्रति आसक्ति अधम पाश हैं। यह वितैषणा की इच्छा को

बढ़ाते हैं। अध: पतन अर्थात् नीचे की ओर ले जाने वाले कर्म करने को व्यक्ति उद्यत हो जाता है।

शरीर के प्रति आसक्ति को समझने का प्रयास करें। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन है। चेतन को भूल कर शरीर की सुन्दरता की ओर आकर्षित रहता है। इस की सुन्दरता व इस सुन्दरता के बढ़ाने के साधनों में समय और धन अपव्यय करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक सुन्दरता की लालसा से पीड़ित केवल इन तीन बिन्दुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है- मैं कैसे दिखता हूँ, इस रूप प्रदर्शन में सौन्दर्य प्रसाधनों व आधुनिक दिखने वाली वेशभूषा पर समय और धन चाहिए। प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने आज के बाजार हैं जो इन्हीं उत्पादनों से भरे पड़े हैं। लगता है कि देश की अर्थ व्यवस्था इन्हीं पर निर्भर हो रही है। दूसरा बिन्दु है प्रतिष्ठा। समाज में मेरी प्रतिष्ठा, मेरी बड़ी कार, बड़ा आलिशान मकान और मेरे बच्चे प्रतिष्ठित, खर्चीले स्कूलों में पढ़ने वाले हों। यह प्रतिष्ठा व पहचान बनाने के लिए आय का स्रोत अच्छा होना चाहिए। सीमित साधनों से तो इस प्रकार की प्रतिष्ठा बनानी कठिन है, तो अन्य असामाजिक तरीकों को अपनाने में संकोच नहीं करता। कर चोरी, मिलावट, नकली सामान, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार इत्यादि आज सामान्य से दिखने वाले अपराधों को नि:संकोच करने लग जाता है। अर्थ की शुचिता का कोई महत्व ही नहीं रह जाता है।

तीसरा बिन्दु है- मैं स्वयं में कैसा हूँ, इसकी चिंता नहीं, परन्तु लोग मुझे लोग मुझे कैसा समझें, यह विचार सदा सताता रहता है, अत: सारे क्रिया-कलाप अन्यों को प्रभावित करने हेतु होते हैं। सच ही तो कहा है कि लोग अपने अभाव से इतने दुखी नहीं हैं, जितने दूसरों के प्रभाव से दुखी हैं। भोगवादी मानसिकता वाले सदा अतृप्त रहते हैं। यह वितैषणा का पाश निम्न कोटि का है। 'मैं नित्य आत्मा हूँ', इसको पूर्णत: भुला कर केवल नश्वर अनित्य शरीर की कभी भी न पूर्ण होने वाली तृष्णाओं में बंधा रहता है।

मध्यम पाश- मध्यम स्थान मन को देते हैं। मोह मन से ही सम्बन्धित होता है। मन से ही मोह उत्पन्न करते हैं। सन्तान का मोह सब मोहों से प्रबल होता है। यह पुत्रैषणा का पाश है। गर्भ से बाहर आते ही बालक का माता से जो सम्बन्ध था, उसे नाडी छेदन से अलग कर दिया जाता है। शारीरिक रूप से सन्तान अलग हो गई परन्तु मोह रूपी डोरी से जीवन पर्यन्त माता-पिता सन्तान से बंधे रहते हैं। सन्तान को ही अपनी आत्मा मानने लगते हैं। मोह का बंधन व्यक्ति को अँधा बना देता है। पुत्रैषणा के कारण अविवेकी होकर उचित अनुचित का निर्णय नहीं कर पाता। रामायण और महाभारत इस के साक्षी हैं। कैकेयी और धृतराष्ट के चरित्र हमारे सामने ज्वलंत प्रमाण हैं कि पुत्रैषणा से पीड़ित व्यक्ति कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, न्याय-अन्याय के विवेक को खो देते हैं। मन के द्वारा ही काम, क्रोध, मोह, लोभ इत्यादि आसुरी वृत्तियों को उत्पन्न करते हैं और मानसिक रोगी बन जाते हैं। पुत्रैषणा के पाश में बंधा व्यक्ति दु:खी व पीड़ित रहता है।

लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा-- कार्य भेद के कारण तीन पाशों को उत्तम, अधम और मध्यम संज्ञा दी गई है। इन तीनों पाशों में से हरेक पाश बंधन में बाँधने में सक्षम है। जो तीनों से जकड़ा हुआ है, उसकी शोचनीय अवस्था का क्या कहना? बंधा हुआ व्यक्ति तो कई बार पाशों के बंधन को अपनी अविद्या के कारण अपने जीवन का अंग मान कर जीवन जीने लगता है। जब कभी ईश कृपा से अविद्या का आवरण विद्वानों के सत्संग से छंटने लगता है तो इन पाशों को दुखदायी व मृग तृष्णा के समान समझने लगता है तो इन तीनों पाशों से छुटकारा पाना जीवन का ध्येय समझ कर सर्वश्रेष्ठ, उपासनीय वरुण परमेश्वर से प्रार्थना करने लगता है कि हे ईश्वर! आप शुभ, श्रेष्ठ, उत्तम कर्मों को करने की प्रेरणा देते रहिये। हम आपकी ही कृपा से ज्ञान के उच्च स्तर पर पहुंच सकें परन्तु अहम भाव न आने पाए अर्थात् ऐषणाओं की लालसा पीड़ित न करे। इन तीनों पाशों को आप शिथिल कर दें।

इस सबके अनन्तर भक्त यह भी प्रार्थना करता है कि इन बन्धनों=पाशों से मुक्त होने के जो साधन हैं तथा परिणाम में सुख-शांति देने वाले हैं, उनका अनुसरण करने वाले बनें। हम पाप रहित अर्थात् शुद्ध पवित्र होकर दु:खों व बन्धनों से मुक्त होकर सुखों को निरंतर प्राप्त करते हुए मोक्ष के अधिकारी बनें।

सदा स्मरण रखें कि पाश दु:खदायी होते हैं और व्रत नियम आत्मोत्थान में सहायक होते हैं। अत: हम ईश्वर की कृपा के पात्र बनें और जीवन में व्रतों को धारण करें।

रक्षा के लिए प्रार्थना

❐**अध्यापक देवराज आर्य,** आर्य टैण्ट हाऊस, रोहतक मार्ग जींद-१२६१०२

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।।

ऋग्वेद ५/५१/१३

पदार्थ : (वैश्वानरः वसुः अग्निः) विश्व नर-सब नरों का हितकारी या समस्त प्राणियों को गति-जीवन देने वाला। 'आत्मा वैश्वानरः' यह आत्मा जो संसार के समस्त जीवों को गति देता है, उनके जीवन का हेतु है, वैश्वानर कहलाता है। इसी प्रकार परमात्मा भी समस्त जीवों की आत्मा को प्रेरणा देने वाला होने के कारण वैश्वानर है। वह प्रभु सब जीवों का हितकारी एवं कर्मफल प्रदाता है इसलिये वह विश्वनर है। वसुः=सबको बसाने वाला अर्थात् ज्ञानी-अज्ञानी, धनी-निर्धन, सबल-निर्बल सभी को वह परमात्मा अपने बल और ज्ञान से आश्रय देता है। मनुष्यों का ही नहीं, संसार के समस्त प्राणियों का वह आश्रयस्थल है, सभी प्रकार से वह समस्त जीव जन्तुओं की रक्षा करता है। अग्निः-कस्मात्? अग्रणीर्भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते। सबसे पूर्व वर्तमान होने से और यज्ञों में उपासनीय होने से परमात्मा अग्नि है। (स्वस्तये) वह उक्त समस्त गुणों का भण्डार परमात्मा हम सबका कल्याण करे।

(विश्वे देवाः) परमात्मा द्वारा प्रदत्त सभी दिव्य पदार्थ या उसकी दिव्य शक्तियाँ (नः) हमारे लिये (अद्य) आज (स्वस्तये) कल्याणकारी होंवें। (देवाः ऋभवः) ज्ञान-प्रकाश से दीप्त ज्ञानीजन (स्वस्तये अवन्तु) कल्याण करने के लिए हमारी रक्षा करें। (रुद्रः) दुष्टों को दण्ड देने वाला, उनको रुलाने वाला जगत् का शासक परमात्मा (नः) हमें (अंहसः पातु) पापों से दूर रखे, जिससे (स्वस्ति) हमारा कल्याण हो।

इस वेद मंत्र को महर्षि ने स्वस्तिवाचन के मंत्रों में लिया है। मंत्र पर विचार करने से पूर्व हमें यह समझ लेना चाहिये कि स्वस्तिवाचन किसे कहते हैं? 'सु+अस्ति' इन दो पदों के योग से 'स्वस्ति' बनता है, जिसका भाव है कि-ऐसा कर्म जिसके करने से सब कुछ अच्छा ही अच्छा अर्थात् सुख, मंगल और कल्याण ही कल्याण होता जाये। यह स्वस्तिवाचन की परम्परा वैदिक एवं अत्यन्त प्राचीन है। यह वैदिक प्रणाली वैदिक-संस्कृति की महानता, उदारता, श्रेष्ठता, आस्तिकता एवं कर्त्तव्य-पालन की ओर हमें अग्रसर करती है। इसमें कितनी उच्च परोपकारिता एवं धार्मिकता की गंध आती है कि हे संसार के पालक, जगत नियन्ता प्रभो! आप हमें पापों से दूर रखकर इस समस्त विश्व का कल्याण करें। हम प्रतिदिन यज्ञ अथवा विशिष्ट अवसरों पर संसार के कल्याण एवं सुख शाँति की प्रार्थना करते हैं। ऐसी उच्च कोटि की भावनाएँ एवं श्रेष्ठ-पवित्र विचार वेद द्वारा ही हमें प्राप्त हो सकते हैं। यदि हम अपने दैनिक जीवन में यज्ञ के साथ केवल एक वेदमंत्र का स्वाध्याय करके उसमें आये भावार्थ को समझकर उसे अपने जीवन का अंग बना लेते हैं तो हमारे अन्दर दिव्यता आनी आरम्भ हो जाती है। मनुष्य जीवन की सफलता भी इसी में है तथा मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने का यह अमोघ साधन है।

यह वेद मंत्र हमें बताता है कि हमारा कल्याण कैसे हो? इसके लिए हम क्या करें? किसका संग करें तथा किसको रक्षा के लिए पुकारें?

मंत्र के प्रथम भाग में कहा है कि 'विश्वे देवाः' अर्थात् उस परमात्मा ने जो दिव्य पदार्थ रचे हैं उनके गुणों को जीवन में धारण करें। पदार्थ दोनों ही प्रकार के हैं- चेतन भी हैं और जड़ भी हैं। चेतन जीवों में दिव्य गुण, कर्म स्वभाव वाले सभी विद्वान् देव कहलाते हैं। 'देवो दानाद् वा' विद्या का दान करने से विद्वान् देव हैं। शतपथ में कहा है 'विद्वांसो हि देवाः' विद्वानों को देव कहते हैं। ये विद्वान् सत्याचरण वाले और विद्याओं में पारंगत होने चाहियें। इसी प्रकार निरुक्त में देव शब्द की निरुक्ति दी है-'देवो दानाद्वा दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा' सब सुखों का दाता, ज्ञान का प्रकाशक तथा प्रकाशस्वरूप होने से परमात्मा का नाम देव है। प्रजापति परमात्मा को भी देव कहते हैं। हम सभी के लिये वही उपास्य है।

यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं तो हमें प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल उस सर्वशक्तिमान परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस विषय में कितने मार्मिक शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि 'जो मनुष्य केवल भांड के समान परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना करता जाता है और अपना आचरण कुछ भी नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।' जरा

हम अपने अन्दर झांक कर तो देख लें- कहीं हम भी ऐसा ही तो नहीं कर रहे हैं। क्योंकि वह परमेश्वर सर्वव्यापक है (कविः) वह सर्वज्ञ, विचारवान्, अत्यन्त ज्ञानी है (मनीषीः) सब जीवों की मन की वृत्तियों को जानने वाला है। वह (शुद्धम्) अविद्यादि दोषों से रहित न्यायकारी तथा दयालु है। हमारे अन्दर यदि असत्य के भाव भरे हैं तथा अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट के द्वारा दूसरों पर अधिकार जमाना चाहते हैं तो याद रख लेना हम कभी कल्याण को प्राप्त नहीं हो सकते। अपनी भलाई और कल्याण के लिये हमें उस परमात्मा से अन्तःकरण से जुड़ना पड़ेगा। किसी कवि ने कहा है कि संग का विशेष प्रभाव पड़ता है इसलिये उस प्रभु का संग करें-

कदली सीप भुजंग-मुख स्वाति एक गुण तीन।
जैसी संगत कीजिये तैसो ही फल दीन।।

अपनी रक्षा के लिए उसी प्रभु का संग करें और उसी को पुकार कर कहें कि-

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युरा चके स्वाहा। ऋ० १/२५/१९

हे सर्वरक्षक, सर्वव्यापक वरणीय प्रभो (ये इमं हवं श्रुधि) मेरी इस पुकार को सुनो और अभी सुखी कर दो, कृपा और रक्षा का इच्छुक मैं आपको पुकारता हूँ। जब कोई भी मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण से उसकी आज्ञा का पालन करता हुआ बड़ी श्रद्धा और निःस्वार्थ भाव से उसकी स्तुति, प्रार्थना उपासना करता है तो वह दयालु परमेश्वर उसके कल्याण के लिए उसे अपनी शरण मे ले लेता है तथा उसके दुःखों को दूर कर देता है। इस विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि ''उसकी आज्ञा का पालन करना ही उसका नाम स्मरण है।'' यदि हम उसकी आज्ञा का पालन तो कुछ करें नहीं और चाहें कि हमारा कल्याण हो जाये, ऐसा नहीं हो सकता। आज मनुष्य की यही दशा है कि वह परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध चलकर अनेक प्रकार के पाप कर्मों में लिप्त है तथा उस न्यायकारी से कल्याण चाहता है। यह उसकी न्याय व्यवस्था से विरुद्ध है और वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, स्वयंभूः है। वह हमारे अन्तःकरण के भावों को जानता है। इसलिये शुद्ध पवित्र मन से उसकी प्रार्थना, उपासना करनी चाहिये।

परमात्मा से दूसरे स्थान पर जीवात्मा है- ''आत्मा वैश्वानरः'' यह आत्मा जो संसार के प्राणियों को गति देता है, उनके जीवन का हेतु है, वैश्वानर कहलाता है। यह आत्मा भी दिव्य है, परन्तु हम इस आत्मा को भी नहीं जानते! जब हम कोई काम करते हैं तो अपने आत्मा के अनुकूल ही करना चाहिए। अर्थात् जिस काम को करने में भय, शंका, लज्जा, उत्पन्न होती हो वह काम हमें नहीं करना चाहिए। 'आत्मनः प्रतिकूलानि न परेषां समाचरेत' जो काम अपने को अच्छा न लगे, जिससे मेरी अपनी आत्मा क्लेशित होती हो तो उसी प्रकार का कर्म और व्यवहार हम दूसरों के साथ न करें। ये पंक्तियां तो आपने कई बार सुनी होंगी-

मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।।

वैश्वानर परमात्मा से प्रार्थना करने और उसके अनुसार अपने आचरण को सुधारने से आत्मा भी उसके दिव्य ज्ञान और प्रकाश से प्रकाशित हो जायेगी जिससे हमें सुख-शान्ति मिलेगी।

वसुः- सबके हृदय में बसने वाला तथा समस्त संसार को बसाने वाला होने के कारण वह परमात्मा वसु कहलाता है। उस प्रभु को जब हम वसु कहते हैं तो हम स्वयं भी दूसरों को बसाने का काम करें। लोभ, मोह और काम के वशीभूत होकर दूसरों को बर्बाद न करें।

धनमाल अपार बटोर भले, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घर बार बसाने को, औरों का घर बर्बाद न कर।।

अग्नि नाम परमात्मा का है- 'अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्' यजुर्वेद के मंत्र के इस भाग में उस दिव्य गुण एवं शक्तियों के भण्डार परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि-हे ज्ञान प्रकाश स्वरूप (देव) परमात्मन्! हमको ज्ञान-विज्ञान तथा ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति के लिये, धर्मयुक्त कल्याणकारी मार्ग से ले चल। आप समस्त ज्ञान और कर्मों को जानने वाले हैं। हमें अपने कल्याण के लिए उस परमात्मा से ही नित्य प्रार्थना करनी चाहिये।

परमात्मा और आत्मा के पश्चात् तीसरी दिव्य शक्ति (देवाः ऋभवः) वेद ज्ञान प्रकाश से दीप्त विद्वान्, ज्ञानीजन हैं। जब तक हम धर्मात्मा विद्वान् पुरुषों से शिक्षा प्राप्त कर उसे जीवन की दिनचर्या का अंग नहीं बनाते तब तक अपने जीवन के लक्ष्य एवं कर्त्तव्य का बोध नहीं हो सकता। मनुष्यों को चाहिये कि वेद के जानने वाले विद्वानों से उत्तम शिक्षा आचार, व्यवहार को सीखकर ज्ञानी होकर अपने जीवन को पुरुषार्थ से परोपकारी एवं धर्मात्मा बनायें। किन्तु ईश्वर और विद्वान् के सत्कार किये बिना किसी मनुष्य को विद्या के पूर्ण सुख प्राप्त नहीं हो सकते। वेद कहता है-हे मनुष्यों! जो तुम लोगों को उत्पन्न कर पालन करने वाले, शिक्षा द्वारा तुम्हें जीवन मार्गदर्शन कराने वाले, वेद ज्ञान देकर सूर्य के समान विद्या प्रकाश करने वाले तथा सब

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

हमारी घरेलू औषधियाँ

बहुत से रोगों के बचाव के उपाय हमारी दिनचर्या और खानपान में ही छुपे हुए हैं। थोड़े से प्रयत्न के द्वारा हम स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

तरोताजा रखता है गुलकंद

गुलाब एक बहुत खुबसूरत फूल ही नहीं है बल्कि यह कई तरह के औषधीय गुणों से भी भरपूर है। नींद न आती हो, मानसिक थकावट हो तो सिरहाने के पास गुलाब रखकर सोएं, फिर देखें परिणाम। आईये, गुलाब से बने गुलकंद के औषधीय गुण जानें-

❍ गुलकंद में गुलाब का अर्क होता है जो शरीर को ठंडक पहुंचाता है। यह शरीर को डीहाइड्रेशन (पानी की कमी) से बचाता है और तरोताजा रखता है। यह पेट को भी ठंडक पहुंचाता है। गर्मी के दिनों में गुलकंद स्फूर्ति देने वाला एक शीतल टॉनिक है, जो गर्मी से उत्पन्न थकान, आलस्य, मांसपेशियों का दर्द और जलन आदि कष्टों से बचाता है।

❍ गुलकंद में विटामिन सी, ई और बी अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। भोजन के बाद गुलकंद का सेवन भोजन को पचाने के लिए लाभकारी है और इसके सेवन से पाचन संबंधी समस्याएं दूर रहती हैं।

❍ गर्मी के कारण चेहरे पर उत्पन्न छोटी-छोटी फुंसियाँ गुलकंद के सेवन से धीरे-धीरे दूर हो जाती हैं। बच्चों के पेट में कीड़े होने पर बाइविडिंग का चूर्ण गुलकंद में मिलाकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम 15 दिनों तक देने से कृमि कष्ट से मुक्ति मिल जाती है।

❍ गुलकंद लेने से पेट के रोग- अल्सर, कब्ज आदि समस्याएं खत्म हो जाती हैं। रोजाना चम्मचभर गुलकंद खाने से आँखों की रोशनी ठीक रहती है। गुलकंद के नियमित सेवन से इसके पाचन के बाद बनने वाला रस आँतों के लिए बहुत हितकर होता है। पाचन क्षमता में सुधार, चयापचय क्रिया का नियमन, रक्तशोधन करने के लिए गुलकंद लाभकारी है।

❍ गर्मियों के मौसम में गुलकंद कई तरह के लाभ पहुंचाता है। हाजमा दुरुस्त रखता है और आलस्य दूर करता है। गुलकंद शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है और कब्ज को भी दूर करता है। सुबह-शाम एक-एक चम्मच गुलकंद खाने पर मसूढ़ों में सूजन या खून आने की समस्या दूर हो जाती है। पीरियड के दौरान गुलकंद खाने से पेट दर्द में आराम मिलता है। मुंह का अल्सर दूर करने के लिए भी गुलकंद खाना फायदेमंद होता है।

❍ गुलकंद में अच्छी मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट्स हैं जो शरीर की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाते हैं और थकान दूर करते हैं। आपकी त्वचा के लिए भी यह बहुत लाभकारी है। इसमें एंटीबैक्टीरियल गुण हैं जो त्वचा की समस्याओं को दूर करते हैं और त्वचा हाइड्रेट रहती है।

बहुत से रोगों की दवा मुनक्का

मुनक्का यानी बड़ी दाख को आयुर्वेद में एक औषधि माना गया है। बड़ी दाख यानी मुनक्का छोटी दाख से अधिक लाभदायक होती है। आयुर्वेद में मुनक्का को गले संबंधी रोगों की सर्वश्रेष्ठ औषधि माना गया है। मुनक्का के औषधीय उपयोग इस प्रकार हैं-

❍ शाम को सोते समय लगभग 10 या 12 मुनक्का को धोकर पानी में भिगो दें। इसके बाद सुबह उठकर मुनक्का के बीजों को निकालकर इन को अच्छी तरह से चबाकर खाने से शरीर में खून बढ़ता है। इसके अलावा मुनक्का खाने से खून साफ होता है और नाक से बहने वाला खून भी बंद हो जाता है। मुनक्का का सेवन 2 से 4 हफ्ते तक करना चाहिए।

❍ 250 ग्राम दूध में 10 मुनक्का उबालें फिर दूध में एक चम्मच घी व खांड मिलाकर सुबह पीएं। इससे वीर्य के विकार दूर होते हैं। इसके उपयोग से हृदय, आंतों और खून के विकार दूर हो जाते हैं। यह कब्जनाशक है।

❍ जिन व्यक्तियों के गले में निरंतर खराश रहती है या नजला एलर्जी के कारण गले में तकलीफ बनी रहती है, उन्हें सुबह-शाम दोनों वक्त चार-पांच मुनक्का बीजों को खूब चबाकर खाना चाहिए, लेकिन ऊपर से पानी न पिएं। दस दिनों तक निरंतर ऐसा करें।

मुनक्का यानी बड़ी दाख को आयुर्वेद में एक औषधि माना गया है। बड़ी दाख छोटी दाख से अधिक लाभदायक होती है। आयुर्वेद में मुनक्का को गले संबंधी रोगों की सर्वश्रेष्ठ औषधि माना गया है।

❍जो बच्चे रात्रि में बिस्तर गीला करते हों, उन्हें दो मुनक्का बीज निकालकर रात को एक सप्ताह तक खिलाएं।

❍सर्दी-जुकाम होने पर सात मुनक्का रात्रि में सोने से पूर्व बीज निकालकर दूध में उबालकर लें। एक खुराक से ही राहत मिलेगी। यदि सर्दी-जुकाम पुराना हो गया हो तो सप्ताह भर तक लें।

❍जिनका ब्लडप्रेशर कम रहता है, उन्हें हमेशा अपने पास नमक वाले मुनक्का रखना चाहिए। यह ब्लडप्रेशर को सामान्य करने का सबसे आसान उपाय है।

❍जितना पच सके उतने मुनक्का रोज खाने से सातों धातुओं का पोषण होता है।

आंखों की ज्योति के लिए:

आंखों की ज्योति बढाने के लिए, नाखूनों की बीमारी होने पर, सफेद दाग, महिलाओं में गर्भाशय की समस्या में मुनक्का को दूध में उबालकर थोड़ा घी व मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

शरीर की पुष्टि के लिए:-

12 मुनक्का, 5 छुहारे, 6 फूलमखाने दूध में मिलाकर खीर बनाकर सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।

बुखार में लाभकारी:-

दस मुनक्का एक अंजीर के साथ सुबह पानी में भिगोकर रख दें। रात में सोने से पहले मुनक्का और अंजीर को दूध के साथ उबालकर इसका सेवन करें। ऐसा तीन दिन करें। कितना भी पुराना बुखार हो, ठीक हो जाएगा।

रक्त की कमी:-

रात में लगभग 10 या 12 मुनक्का को धोकर पानी में भिगो दें। इसके बाद सुबह उठकर मुनक्का के बीजों को निकालकर इन मुनक्का को अच्छी तरह से चबाकर खाने से शरीर में खून बढ़ता है।

कब्ज की समस्या में:-

प्रतिदिन सोने से एक घंटा पहले दूध में उबाली गई 11 मुनक्का खूब चबा-चबाकर खाएं और दूध को भी पी लें। इस प्रयोग से कब्ज की समस्या में तत्काल लाभ होता है।

बहुत गुणवान है केला

ऊर्जा का अच्छा स्रोत होने के साथ केले में विटामिंस व मिनरल्स की भी अच्छी मात्रा होती है। ऐसे बहुत कम लोग ही होंगे, जो केले को अपने पसंदीदा फल की लिस्ट में रखते हैं। लेकिन यह फल है बहुत काम का। यह सर्वत्र उपलब्ध है और खाने में भी आसान है।

गर्भावस्था में जरूरी

गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को सबसे ज्यादा विटामिन व मिनरल्स की आवश्यकता होती है। ऐसे में आप अपनी डाइट में केला अवश्य शामिल करें। यह शरीर को धीरे-धीरे ऊर्जा देता है और आसानी से हजम भी हो जाता है। आप केले को स्नैक्स के तौर पर भी ले सकते हैं। अगर आपको उबकाई आती है, तो आप रोजाना केला खाएं।

बुढ़ापे का भोज्य

आपको बता दें कि केला बुजुर्ग लोगों के लिए भी सबसे श्रेष्ठ फल है। इसे आसानी से छीलकर खाया जा सकता है। यही नहीं, इसमें विटामिन सी, बी6 और फाइबर होता है, जो बुढ़ापे में जरूरी है। चूंकि बुढ़ापे में कब्ज की शिकायत ज्यादा होती है। ऐसे में आप रोजाना केला खाएं।

प्रदर रोगः-

केले और दूध की खीर खाने या प्रातः सायं दो केले घी के साथ खाने या दो केले भोजन के साथ घंटे बाद खाकर ऊपर से एक कप दूध में दो चम्मच शहद घोलकर लगातार कुछ दिन पीने से प्रदर रोग ठीक हो जाता है।

प्रदर और धातु रोगः-एक पका केला एक चम्मच घी के साथ 4-5 बूंद शहद मिलाकर सुबह-शाम आठ दिन तक रोजाना खाने से प्रदर और धातु रोग में लाभ होता है।

दस्त और पेचिशः- दो केले आधा पाव दही के साथ कुछ दिन खाने से दस्त ओर पेचिश में लाभ होता है।

❍मुंह में छाले हो जाने पर गाय के दूध के दही के साथ केला खाने से लाभ होता है।

❍यदि बाल गिरते हों तो केले के गूदे में नींबू का रस मिलाकर सिर में लगाने से बाल झड़ना रुक जाता है।

❍पके हुए केले को आंवले रस तथा शक्कर मिलाकर खाने से बार-बार पेशाब आने की शिकायत दूर होती है।

❍एक पका केला मीठे दूध के साथ आठ दिन तक लगातार खाने से नकसीर में लाभ होता है।

जानते हो!

–रवीश आर्य

●पानी में गहरा गोता लगाने के लिए मगरमच्छ कभी कभी भारी पत्थर भी निगल लेता है।

●रीछ घोड़े से भी तेज दौड़ सकता है।

●नीली व्हेल मछली का हृदय एक मिनट में केवल ९ बार धड़कता है।

●बी ईटर (मक्खी खोर) नाम का पक्षी एक दिन में प्रायः २५० मक्खियाँ खा जाता है।

●हाथी खाने में भी उस्ताद है और मल विसर्जन में भी। हाथी प्रतिदिन लगभग २२० पाउंड मल छोड़ता है।

●बिल्ली की आंखों का रंग आयु बढ़ने के साथ साथ बदलता रहता है।

●बिल्ली अपने कद से सात गुणा ऊँचा कूद सकती है।

●काकरोच एक सैकेंड में २५ बार अपना रास्ता बदल सकता है।

हास्यम्

–कीर्ति कटारिया

♦अनु– काकू, बहका दिया मुझे, मैं तो डूब गया होता, तुम तो कह रहे थे यहाँ घुटने तक पानी है।

हरसी– मैं क्या करूँ पुत्तर, मैंने तो सुबह देखा था, यहाँ बत्तख तैर रहे थे और उनको घुटनों तक पानी आ रहा था।

♦(रोगी चिकित्सक के पास दुबारा गया)

चिकित्सक : दवाई पी ली थी या नहीं ?

रोगी– नहीं साहब, दवाई तो हरी थी।

चिकित्सक–मेरा मतलब है दवाई ले ली थी ना ?

रोगी– हाँ डॉक्टर जी, आपने दी, तो मैंने ले ली थी।

चिकित्सक– अरे यार दवाई खा ली थी ना ?

रोगी– नहीं जी, शीशी तो भरी हुई थी।

चिकित्सक– अबे गधे, दवाई को पी लिया था ना ?

रोगी– अरे नहीं साहब, पीलिया तो मुझे था !

♦अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबन्ध लिखने को दिया– विषय था– 'आलस्य क्या है ?'

एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा– 'यही आलस्य है।'

♦अध्यापक– छात्रों से– अगर न्यूटन पेड़ के नीचे नहीं बैठते और उनके सिर के ऊपर सेब नहीं गिरता तो गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत हमें कैसे पता चलता ?

छात्र– सर ! बिलकुल सही कहा आपने, अगर न्यूटन हमारी तरह क्लास में बैठकर इसी तरह किताब पढ़ रहे होते तो वे भी कोई आविष्कार नहीं कर पाते।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिकाः

❖दो पैरों का एक जानवर
फिर भी है बेजान
सारी दुनिया को समझाए,
हर पल होत महान्

❖एक पैर की एक बालिका
पहने लहंगा घेरदार।
काम बहुत आती है सबके
वर्षा धूप की पड़े जब मार।।

❖पहाड़ हैं पर पत्थर नहीं,
वन हैं पर पेड़ नहीं,
शहर है पर जीव नहीं,
नदी है पर जल नहीं।।

❖नाम है मेरा तीन अक्षर का
रहने वाला सागर तट का।
खाने में आता हूँ काम,
बोलो बच्चों मेरा नाम।।

घड़ी, छतरी, नक्शा (मैप), नमक

विचार कणिकाः

❒प्रतिष्ठा

❖अत्याचार सहने से अत्याचार करने पाले पैदा होते हैं।

❖हम स्वयं ही अपने आप के सबसे बड़े सहायक हैं।

❖न्यायकारी निर्बल का भी समर्थन करो।

❖धर्म विरुद्ध आचरण करने से मनुष्य का नाश होता है।

❖उधार लेने से ऐसे डरना चाहिए जैसे मौत से।

❖चरित्र का बीज बोकर लक्ष्य की फसल काट लो।

❖संसार में जितनी हानि मूर्खता और अज्ञान से होती है उतनी और किसी चीज से नहीं, इसलिए ज्ञान प्राप्त करो।

❖लोग जितना व्यय और परिश्रम बच्चों के विवाह के लिए करते हैं उतना उन्हें उत्तम संस्कार व सदाचार की शिक्षा देने के लिए नहीं करते।

❖गुणों से पूजा होनी चाहिए। जो गुणी है वही पूज्य है।

❖तोड़ने वाले तो बहुत हैं, जोड़ने वाले कम हैं; लड़ाने वाले बहुत हैं, मिलाने वाले कम हैं।

प्रेरक कथा

अवसर मत चूको

जिन्दगी अवसरों से भरी हुई है। कुछ सरल हैं और कुछ कठिन। सरल अवसर के इंतजार में कठिन अवसरों को नहीं छोड़ना चाहिए। अगर एक बार अवसर गवां दिया तो फिर वह दुबारा नहीं मिलेगा। अतः हमेशा प्रथम अवसर को हासिल करने का प्रयास करना चाहिए।

एक किसान था। उसकी बेटी सयानी हो गई। उसे उसके विवाह की चिन्ता हुई। उसे अपनी बेटी के लिए एक योग्य और समझदार वर चाहिए था। उसने घोषणा की कि जो युवक उसकी परीक्षा में पास होगा उसी से वह अपनी बेटी की शादी करेगा।

एक नौजवान आदमी उसकी बेटी से शादी की इच्छा लेकर किसान के पास गया। किसान ने उसकी ओर देखा और कहा, 'युवक, खेत में जाओ। मैं एक-एक करके तीन बैल छोड़ने वाला हूँ। अगर तुम तीनों बैलों में से किसी भी एक की पूँछ पकड़ लो तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूंगा।'

नौजवान खेत में बैल की पूँछ पकड़ने के लिए सावधान होकर खड़ा हो गया। किसान ने खेत में स्थित घर का दरवाजा खोला और एक बहुत ही बड़ा और खतरनाक बैल उसमे से निकला। नौजवान ने ऐसा बैल पहले कभी नहीं देखा था। उससे डर कर नौजवान ने निर्णय लिया कि इस की पूंछ पकड़ना खतरे से खाली नहीं है। वह अगले बैल का इंतजार करेगा और वह एक तरफ हो गया जिससे बैल उसके पास से होकर निकल गया।

दरवाजा फिर खुला। आश्चर्यजनक रूप से इस बार पहले से भी बड़ा और भयंकर बैल निकला। नौजवान ने सोचा कि इससे तो पहले वाला बैल ठीक था। फिर उसने एक ओर होकर बैल को निकल जाने दिया।

दरवाजा तीसरी बार खुला। नौजवान के चेहरे पर मुस्कान आ गई। इस बार एक छोटा और मरियल बैल निकला। जैसे ही बैल नौजवान के पास आने लगा, नौजवान उसकी पूँछ पकड़ने के लिए सावधान हो गया ताकि उसकी पूँछ सही समय पर पकड़ ले। पर पास आने पर पता चला कि उस बैल की पूँछ थी ही नहीं---।

अनुभवी किसान ने नौजवान को विनम्रता से कहा कि वह उससे अपनी बेटी की शादी नहीं करेगा।

बाल-गीत

अमर रहे गणतंत्र हमारा।।

जिस की खातिर बलिवेदी पर, हंस हंस चढ़े वीर बलिदानी।
कुरबानी की स्याही से जो लिख गए अपनी अमर कहानी।।
मरते दम तक मुंह से निकला, भारत मां की जय का नारा।।
अमर रहे गणतंत्र हमारा।।

बहुभाषा भाषी हैं लेकिन, एक देशभक्ति की बोली।
है अपना उल्लास एक सा, चाहे ओणम हो या होली।।
बड़ी बड़ी विपदाओं में भी, एक अखण्डित भाईचारा।।
अमर रहे गणतंत्र हमारा।।

सब शिक्षित हों सब निरोग हों सबमें इसका प्यार पले।
हटे निराशा का अँधियारा, आशाओं का सूर्य खिले।।
मिलकर सदा बढेंगे आगे, जीवन में हमने व्रत धारा।
अमर रहे गणतंत्र हमारा।।

एक तिरंगे की छाया में, आगे बढ़ें संगठित होकर।
भूखा वंचित रहे न कोई, हाथ बढ़ाएँ सारे मिलकर।।
करें समर्पित इस पर जीवन, यह है अपना भारत प्यारा।।
अमर रहे गणतंत्र हमारा।।

-सहदेव समर्पित

हमारे महान वैज्ञानिक-१

अगस्त्य मुनि

बैटरी के आविष्कारक

बच्चो! आप लोगों के घर में वह बैटरी तो जरूर होगी जो बिजली से 'चार्ज' होती है। आपको यह जानकर बड़ा आश्चर्य होगा कि इस बैटरी का आविष्कार सबसे पहले अगस्त्य मुनि ने किया था। आप लोग सामान्यतः यह जानते हैं कि इस विद्युत बैटरी का आविष्कार बेंजामिल फ्रेंकलिन ने किया था किन्तु आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि बैटरी ज्ञान के बारे में सर्वप्रथम भारतीय ऋषि अगस्त्य ने विश्व को बताया।

अगस्त्य संहिता में महर्षि अगस्त्य ने बैटरी निर्माण की विधि का वर्णन किया है। अगस्त्य संहिता में एक सूत्र है-

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन चार्द्राभिः काष्ठापांसुभिः।।
दस्तालोष्टो निधातव्य पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्।।

अर्थात् एक मिट्टी का बर्तन लें, उसे अन्दर तक अच्छी प्रकार से साफ करें। उसमें ताम्रपत्र और शिखिग्रीवी (मोर की गर्दन के रंग जैसा पदार्थ अर्थात् कॉपरसल्फेट) डालें। फिर उस बर्तन को लकड़ी के गीले बुरादे से भर दें। उसके बाद लकड़ी के गीले बुरादे के ऊपर पारा आच्छादित दस्त लोष्ट (mercury amalgamated zinc sheet) रखें। इस प्रकार दोनो के संयोग से अर्थात् तारों के द्वारा जोड़ने पर मित्रावरुण शक्ति की उत्पत्ति होगी।

यहाँ यह उल्लेखनीय भी है कि यह प्रयोग करके भी देखा गया है जिसके परिणामस्वरूप 1.138 वोल्ट तथा 23 एम ए धारा वाली विद्युत् उत्पन्न हुई। स्वदेशी विज्ञान संशोधन संस्थान (नागपुर) के द्वारा अपनी चौथी वार्षिक सभा में ७ अगस्त १९९० को इस प्रयोग का प्रदर्शन भी विद्वानों तथा सर्वसाधारण लोगों के समक्ष किया गया। अगस्त्य संहिता में आगे लिखा है-

अनेन जलभंगोस्ति प्राणोदानेषु वायुषु।
एवं शतानां कुंभानां संयोगकार्यकृत्स्मृतः।।

अर्थात् सौ विद्युत्-कुंभों (उपर्युक्त प्रकार से बने तथा शृंखला में जोड़े गये सौ सेलों) की शक्ति का पानी में प्रयोग करने पर पानी अपना रूप बदल कर प्राण वायु (ऑक्सीजन) और उदान वायु (हाइड्रोजन) में परिवर्तित हो जाएगा।

फिर लिखा गया है-

वायुबन्धक निबद्धो यानमस्तके उदान स्वलघत्वे बिभर्त्याकाशयानकम्।

अर्थात् उदान वायु (हाइड्रोजन) को बन्धक वस्त्र (air tight cloth) द्वारा निबद्ध किया जाए तो उसे विमान विद्या (aerodynamics) के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

स्पष्ट यह कि यह आज के विद्युत बैटरी का सूत्र ही है। साथ ही यह प्राचीन भारत में विमान विद्या होने की भी पुष्टि करता है। (साभार पाञ्चजन्य)

ओ३म्

योग अपनाओ रोग भगाओ!

सुखी जीवन जीने की उत्तम कला

योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने के लिए सम्पर्क करें

योगाचार्य सूर्यदेव आर्य

आर्य युवा रत्न अवार्ड से सम्मानित

राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक, फर्स्ट एड लेक्चरर, प्रभाकर, बी एड, एन० डी० डी० वाई०, डी० वाई० एन०, डी० स्वास्थ्य संरक्षण (हैल्थ मैनेजमेंट) मुख्य प्रशिक्षक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा

सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद-१२६१०२
मो० ९४१६६ १५५३६, ९४१६७ १५५३७

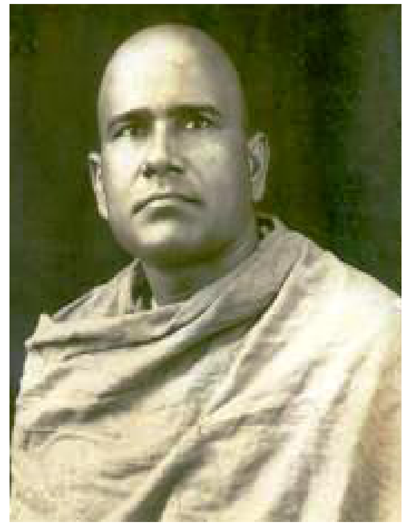

कुछ करलो यतन, हो गया पतन, लुट रहा वतन,
जरा होके खड़े देखो।।

यहाँ कभी थे जब कृष्ण मुरारी–गऊ भी ९६ करोड़ थी प्यारी,
आज लाखों जाती हैं मारी।।
चलती कटार, बहे रक्त धार, होके बेकार
तुम घर में पड़े देखो।।१।।

देखकर भारत माता रोती–रो रो कर जिन्दगानी खोती,
लूट लिए मेरे जवाहर मोती।
दिये मेरे लाल, जेलों में डाल, कोई बिना काल
फांसी पे चढ़े देखो।।२।।

भारत माता कहे हद होली-मेरे बच्चों के मार दी गोली,
गोली मार के लाश लहकोली।
जाने है जगत, ये वक्त सख्त, मेरे देख भगत, भूखे भी सड़े देखो।।३।।

हमारे ऐसी डाल दई नाथ– बिना हथियार के खाली हाथ,
बैठ कर नहीं कर सकते बात।
करे बेजबान, लाकर लगान, श्रमिक किसान, सहें कष्ट कड़े देखो।।४।।

हुए धन बल विद्या बिन रीते–कहो हम किस जीने में जीते।
दुशमन खून हमेशा पीते।
मिलकर के संग, हम किये तंग, महानीच मलंग,
फिर हम से लड़े देखो।।५।।

पकड़ हम सांपों से कटवाए–बच्चे भींतों में चिनवाए,
चीर दिए और अग्नि में जलाए।
दिए जिगर छोल, ना सके बोल, हम बेचे मोल, धर धर के धड़े देखो।।६।।

जिन्हें तुम चाहो भाई बनाना– चाहते काश्मीर हथियाना,
करें हैं नित ही नया बहाना।
जब हैदराबाद, हुआ था फिसाद, करके उपाध, बन रोड़े अड़े देखो।।७।।

चाहे कोई कितना ही दूध पिलाले–जहर ना तजते विषधर काले,
आप क्यों घर लुटवा रहे ठाले।
रहो होशियार, सब पुरुष नार, **भीष्म** विचार, कर छंद जड़े देखो।।८।।

कुछ कर लो यतन
हो गया पतन!

❒स्वामी भीष्म जी

विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा

डॉ. कविता वाचक्नवी के दोहों को श्रेष्ठ कविता का सम्मान

-कार्यालय प्रतिनिधि

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार की संस्था 'विश्वम्भरा' की संस्थापक-महासचिव एवं वरिष्ठ कवयित्री डॉ0 कविता वाचक्नवी को विश्व हिंदी सचिवालय (भारत सरकार व मॉरीशस सरकार का संयुक्त उपक्रम) द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता में (भौगोलिक क्षेत्र यूरोप के अंतर्गत) सर्वश्रेष्ठ सम्मान प्रदान किया गया है। 'विश्वम्भरा' द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में यह जानकारी दी गई है कि वर्तमान में लंदन में रहकर हिन्दी में स्वतंत्र लेखन और भारतीय संस्कृति के लिए काम कर रहीं तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी की अंतरराष्ट्रीय परीक्षाओं की परीक्षक डॉ0 कविता वाचक्नवी को यह पुरस्कार उनकी रचना 'राष्ट्रीय दोहे' पर दिया जा रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय की घोषणा के अनुसार इस अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के अंतर्गत उन्हें 300 डॉलर की सम्मान राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा।

ध्यातव्य है कि कविता वाचक्नवी प्रसिद्ध आर्य विद्वान पंडित इन्द्रजित् देव (यमुनानगर) की सुपुत्री तथा विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक और वैदिक विद्वान डॉ0 हरिश्चंद्र की पत्नी हैं, जिन्होंने विदेशी विश्वविद्यालय में अपनी प्रोफेसरशिप सहित अपना व परिवार का सर्वस्व वेद प्रचार में लगा कर वैदिक प्रचारक के रूप में स्वयं को 1998 से समर्पित कर दिया है। ब्रिटेन के विभिन्न विश्वविद्यालयों में व स्थान-स्थान पर उनकी नियमित ध्यान और वैदिक ज्ञान-विज्ञान की अभूतपूर्व कक्षाएँ चलती हैं। डॉ0 हरिश्चंद्र द्वारा वेदादि विषयों पर 6-8 पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गई हैं जो देश-विदेश व नई पीढ़ी में अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। महर्षि के संदेश को विदेशियों व गोरों में पहुँचाने हेतु इस युगल (डॉ0 हरिश्चंद्र व डॉ0 कविता) की बेटी द्वारा इंग्लैण्ड में अपने पिता की इच्छा को प्रधानता देते हुए एक रजिस्टर्ड चैरिटी संस्था सेंटर फॉर इनर साईंसेज भी संचालित स्थापित की गई है। यह संस्था आर्यसमाज के ऋषि प्रणीत दस नियमों को विधिवत् अपना लक्ष्य बनाकर पूरी तरह अंग्रेजी में व विदेशियों के मध्य कार्य करती है।

डॉ0 कविता वाचक्नवी हिन्दी साहित्य व पत्रकारिता का एक प्रतिष्ठित नाम हैं। गत वर्ष जुलाई में उनकी एक कविता को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अपने अनिवार्य हिन्दी के आधार पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया था व गत वर्ष ही भारतीय उच्चायोग, लन्दन ने उन्हें ब्रिटेन में सर्वश्रेष्ठ पत्रकारिता हेतु 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' से अलंकृत किया था। इनकी कविताएँ केंद्र सरकार व अन्य कई राज्यों के विद्यालयीय पाठ्यक्रमों में भी वर्ष 2002 से सम्मिलित की जा चुकी हैं।

कविता वाचक्नवी के कुछ 'राष्ट्रीय दोहे'

शीश सजा हिम का मुकुट, धोय समंदर पाँव।
ऐसी भारत माँ बसे, सुन्दर मेरे गाँव।।

वर्षा भारी असम में, सूखा राजस्थान।
पर सोना उपजा रहे, मिल मजदूर किसान।।

प्राण पुष्प से पूजते, हो जाते बलिदान।
सीमा पर हुंकारते, सिंह समान जवान।।

रंग-रंग के लोग हैं, रंग-रंग के फूल।
मेरे प्यारे देश में रंग-रंग की धूल।।

भाषा चाहे अलग हैं, अलग नहीं हैं भाव।
एक नदी में तैरतीं, तरह-तरह की नाव।।

अपने सब त्यौहार हैं, अपने हैं सब खेल।
तोड़े से न टूटता, अपना ऐसा मेल।।

अपना यह परिवार है, अपने हैं सब लोग।
साथ सभी मिलकर सहें, दुःख, आपद औ' रोग।।

ज्योतिर्मय जग को किया, दिया वेद का ज्ञान।
विश्ववंद्य भारत रहा, संस्कृति सूर्य समान।।

अस्त्र-शस्त्र की होड़ में पगलाया संसार।
सत्य, अहिंसा, प्रेम हैं भारतीय उपचार।।

४० वर्ष से अधिक की सेवा के उपरान्त

ओमप्रकाश आर्य सेवानिवृत्त हुए

कार्यालय प्रतिनिधि

आर्यसमाज, गौकर्ण मार्ग, रूपनगर रोहतक के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य लगभग ४० वर्ष २ मास की सरकारी सेवा पूरी के करने के बाद ३० नवम्बर २०१३ को सेवानिवृत्त हो गए। आपने अपनी सरकारी सेवा वर्ष १९७३ में डाक व तार विभाग में टेलीफोन आपरेटर के रूप में प्रारम्भ की थी। लगभग १० वर्ष इस विभाग में कार्य करने के बाद अपनी उच्च शैक्षणिक योग्यता के आधार पर भारतीय संसद के द्वितीय सदन राज्यसभा में अनुवादक के पद पर नियुक्त हुए। छः वर्ष पश्चात् प्रथम श्रेणी के राजपत्रित अधिकारी के रूप में प्रोन्नति मिली। बाद में राज्य सभा सचिवालय में तीन बार प्रोन्नति लेकर विभिन्न पदों पर प्रशंसनीय कार्य करते हुए अंत में संयुक्त निदेशक (Joint Director) के गरिमापूर्ण पद से सेवानिवृत्त हुए।

आपका जीवन आदर्श आर्य वैदिक गृहस्थी का जीवन रहा है। दिल्ली में सेवारत रहते हुए भी आपने अपने परिवार में वैदिक संस्कारों की सुस्थापना और उनके सुदृढ़ीकरण के लिए अपने परिवार का निवास रोहतक में ही रखा। स्वयं ३० वर्ष तक दैनिक यात्री के रूप में कठोर दिनचर्या का पालन किया। आपके परिवार में पंच महायज्ञों का अनुष्ठान पूरी श्रद्धा से किया जाता है।

अपने सखा ब्र० सत्यकाम जी तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के सहयोग से रोहतक शहर के पश्चिमी क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियों में आप छात्र जीवन से ही संलग्न रहे हैं। अब तो एक अच्छा स्थान लेकर आर्यसमाज का एक आकर्षक एवं भव्य भवन भी निर्माण करा दिया है। संभवतः रोहतक का यह एक मात्र आर्यसमाज है जहाँ आज भी छोटे बच्चों की शाखा प्रतिदिन दोनों समय लगती है और युवकों का एक पूरा समूह व्यायामशाला चलाता है। आधुनिक विज्ञान की सुविधाओं का उपयोग करते हुए इस समाज के युवक फेसबुक आदि के माध्यम से भी वैदिक विचारों का प्रचार करने में संलग्न रहते हैं। इस समाज में लगभग सभी धार्मिक और राष्ट्रीय पर्व विशेष रूप से मनाए जाते हैं। श्री आर्य के मार्गदर्शन और सक्रियता के कारण यह आर्य समाज अत्यंत गतिशील संस्था के रूप में कार्य कर रही है।

श्री ओमप्रकाश आर्य के परिवार में दो सुपुत्र और एक सुपुत्री हैं। बड़ा बेटा सिंडिकेट बैंक में मैनेजर के पद पर और छोटा बेटा 'पतंजली योगा हर्बल फूड प्रोसेसिंग पार्क' हरिद्वार में इलैक्ट्रिकल इंजिनियर के रूप में कार्यरत है। आप की सुपुत्री ने आधुनिक पढ़ाई के साथ साथ आर्ष शिक्षा भी प्राप्त की है और पतंजलि योगपीठ स्थित आर्ष कन्या गुरुकुलम् में वैदिक विदुषी बनने की अभिलाषी युवतियों को पढ़ाने के लिए आचार्या के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

श्री आर्य ने सेवानिवृत्ति के अवसर पर विभिन्न परोपकारी संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान किया है। आपने इस अवसर पर अपने पाच मित्रों को शांतिधर्मी की आजीवन व बहुवार्षिक सदस्यता भी भेंट की है।

राजकीय सेवा में रहते हुए भी श्री आर्य ने समाज के उत्थान के लिए तन-मन-धन से कार्य किया है। समाज सेवा की प्रवृत्ति होने के कारण वे समाज सेवा के लिए अब अधिक समय देंगे। परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री आर्य स्वस्थ व दीर्घायु हों, ताकि उनके निर्देशन और मार्गदर्शन में इसी प्रकार समाज और राष्ट्र-सेवा के कार्य होते रहें।

रक्षा के लिए---- पृष्ठ २३ का शेष

प्रकार से अन्न, वस्त्रादि देकर सुखी करते हैं, उनकी निरन्तर सेवा, सत्कार एवं संग किया करो। विद्वान् आप्त और सज्जनों के संग के बिना कोई भी व्यक्ति सुख, शान्ति और कल्याण को प्राप्त नहीं हो सकता।

अन्तिम बात मंत्र में आई कि वह प्रभु हमें पापों से बचाये क्योंकि पाप या अधर्म का फल सदैव दुःख होता है। हम हमेशा पापी, अधर्मी, लोगों से बचने और पाप कर्मों से दूर रहने की परमात्मा से प्रार्थना करें। यदि जीवन में इनसे बच गये तो कल्याण ही कल्याण है। पहली दिव्य शक्ति परमात्मा, दूसरी आत्मा, तीसरी वैदिक विद्वान् धर्मात्मा पुरुष एवं चौथी दुष्ट व्यक्तियों और पापों से बचे रहने की दृढ़ इच्छा।

साधक और साधना– पृष्ठ १९ का शेष

इन्द्रदत्त की आंखें छलछला आईं और गला रुंध गया। वह अपने ऊपर नियन्त्रण रखने का प्रयास करने लगा। कुछ क्षणों के लिये आचार्यजी भी मौन होकर विचारों में डूब गये।

इन्द्रदत्त संभल कर पुनः बोला, "आचार्य जी! यह कदम तो मैंने उस समय भावावेश में ही उठाया था, परन्तु अब मेरे लिये एक चुनौती बन गया है-- अपितु एक लक्ष्य बन गया है, जिसे मैंने प्राणपण से पूरा करना है। इस मार्ग पर मुझे अनेक कठिनाईयों एवं बाधाओं का सामना करना पड़ा है। आप जानते हैं कि आज के इस युग में अपनी एक दो सन्तानों का पालन–पोषण करना भी सरल कार्य नहीं है मेरे पास तो पन्द्रह बच्चे हैं। इनके भोजन, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा आदि पर पहले तो मैं अपनी ओर से ही सारा व्यय करता रहा। अब मेरा मकान भी गिरवी पड़ा है। कुछ ऋण भी लोगों से लिया हुआ है परन्तु फिर भी कई बाधायें हैं। मैंने समाचार पत्रों के माध्यम से सहायता के लिये एक निवेदन किया था, जिसके बदले में लोगों का सहयोग अब प्राप्त हो रहा है। मैं इसीलिये यहां पर आया था। अब तो यह बीड़ा मैंने उठाया है। इसके लिये चाहे कुछ भी करना पड़े मैं पीछे नहीं हटूंगा।"

आचार्य व्यासदेव उसकी बातें सुनकर गम्भीर हो गये और बोले, "देखो भाई! वैसे तो मैं आपकी कोई बहुत बड़ी सहायता न कर सकूंगा परन्तु फिर भी कुछ अवश्य ही आपको दूंगा और अन्य लोगों को भी इसके लिये प्रेरित करूंगा। आप मानव सेवा का इतना बड़ा कार्य कर रहे हैं आपकी सहायता करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी।" इन्द्रदत्त ने हाथ जोड़ कर आचार्यजी का धन्यवाद किया और बोला, "आचार्यजी, आपका कार्य और लक्ष्य तो बहुत ऊंचा है। सत्य में संसार में इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। आप तो वास्तव में स्तुत्य हैं, वन्दनीय हैं। परन्तु इस अवस्था को हर कोई प्राप्त नहीं कर सकता। मैं तो मात्र एक छोटा सा मानव–सेवा का कार्य करने वाला तुच्छ सा प्राणी हूं जो मानवता के आंसू पोंछने का विनम्र सा प्रयास कर रहा हूं। यदि आप सदृश महापुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त होगा तो संभवतः मैं भी कुछ कर पाऊंगा।"

इन्द्रदत्त तो सहायता लेकर चला गया, परन्तु अपने पीछे कुछ प्रश्न छोड़ गया। सायंकाल की साधना के पश्चात् आचार्यजी पीठ पर हाथ बांधे पेड़ों के उन्हीं झुरमुटों में विचर रहे थे, जहां पर कल ध्यान के लिये बैठे थे। वे सोच रहे थे कि संसार में कितनी समस्यायें हैं। उनसे मुहं मोड़ कर एकान्त स्थान पर आ कर बैठ जाना कोई समाधान नही है। जब तक इस धरा पर दीन दुःखियों की चीत्कार है, तब तक कोई कैसे उनसे मुंह मोड़ कर साधना कर सकता है? मैं भले ही कितने दिनों से वैराग्य को धारण करके ईश्वर का ध्यान करने में मग्न था, परन्तु आज यह साधारण सा व्यक्ति आकर क्या कह कर चला गया है! इन्द्रदत्त के शब्द बार–२ उनके कानों में गूंज रहे थे, "मैं भला अपने सामने रोते, बिलखते, भूखे एवं असहाय बच्चों को कैसे देख सकता था"? क्या इन्द्रदत्त की साधना, उसका पुरुषार्थ, मानवता के लिये उसकी तड़प– किसी तपस्या से कम आंकी जा सकती है? कदापि नहीं। दूसरे लोगों के लिये जो स्वयं कष्ट उठाता फिरता हो, उसकी साधना तो वास्तव में वन्दनीय है। आचार्यजी ने निश्चय किया कि वे प्रति माह उन्हें कुछ सहायता दिया करेंगे और अपना कुछ समय उन अनाथ बच्चों के साथ बिताया करेगें।

ओ३म्

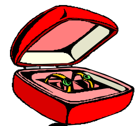

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)–१२६१०२

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-१२-२०१४ को प्रकाशित।

वे डाकू नहीं थे – पृष्ठ १७ का शेष

बाघा जतीन कहा जा सकता है। चीन, अमेरिका आदि देशों में गये तो थे कुछ धनोपार्जन करने के लिए, पर गुलामी के कारण होने वाले तिरस्कार ने उन्हें क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बना दिया। गदर के लिए वे भी भारत आ गये। अपने गाँव सगवाल (जालन्धर) में एक पंचायत बनाई। एक बार इस पंचायत ने चीफ कोर्ट के निर्णय को भी बदल दिया और दोनों पक्षों ने उसे प्रसन्नता से स्वीकार किया। गदर पार्टी के सेनानी इनके घर आते ही रहते थे। अत: पुलिस ने घर पर छापा मारा। बन्तासिंह घर पर नहीं थे। उनकी गिरफ्तारी के वारंट निकल गये। वे फरार हो गये।

एक दिन लाहौर के अनारकली बाजार से मित्र सज्जन-सिंह के साथ गुजरते समय पुलिस दारोगा ने तलाशी लेनी चाही, तो उसे गोली से उड़ाकर भाग गये। अपने साथी प्यारा सिंह को पुलिस से पकड़वाने वाले जैलदार चंदासिंह को उसके घर जाकर (२५ अप्रैल १९२५) ही मौत के घाट उतार दिया। इसी प्रकार ४ जून को एक मुखबिर अच्छर सिंह को भी यमलोक भेज दिया।

अंग्रेजी सरकार का तख्ता पलटने के लिए हथियारों की जरूरत थी। विदेश से भेजे गये हथियार सरकार ने रास्ते में ही जब्त कर लिये थे। इसलिए यह तय किया गया कि सरकारी सिपाहियों से छीन कर राइफलें प्राप्त की जायें। १२ जून १९१५ को सरदार बन्तासिंह आदि सात क्रांतिकारियों ने अमृतसर के निकट (बल्ला गाँव के निकट) सिपाहियों पर आक्रमण कर दिया। वे घबराकर अपने हथियार छोड़कर भाग खड़े हुए। छह राइफलें और ढेर सारे कारतूस क्रांतिकारियों को मिल गये। दो सिपाही गोलीबारी में मारे गये। पुलिस ने क्रांतिकारियों का पीछा किया। खबर फैला दी गई कि हथियार डाकुओं ने लूटे हैं, इसलिए गांव के लोग भी पुलिस के साथ हो गये। क्रांतिकारी भागे, परन्तु बन्तासिंह को छोड़कर बाकी सब पकड़े गये। बन्तासिंह ६० मील तक दौड़ते चले गये, पर थक कर चूर हो गये। कुछ समय अपने गाँव में छिपकर रहे। उनके एक निकट सम्बन्धी ने इन्हें अपने घर पर रखकर पुलिस से पकड़वा दिया। इनके साथी आत्मा सिंह, कालूसिंह और चाननसिंह को ६ अगस्त १९१५, बूटासिंह को १२ अगस्त और बन्तासिंह को १४ अगस्त को फाँसी दे दी गई। फाँसी का हुक्म होने से फाँसी लगने के दिन तक वीर सिपाही का वजन ग्यारह पाउण्ड बढ़ गया था।

प्रिय पाठकवृन्द! क्रांतिवीरों को पकड़कर जेल में डालने व फाँसी चढ़ाने में केवल नाम व इनाम की लोभी व अज्ञानी जनता ही अंग्रेजों की सहयोगी नहीं थी, अपितु लम्बे समय तक देश के स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व करने वाले, अहिंसा के परम प्रचारक गाँधी जी भी अपनी सेवाओं के बदले 'सर' की उपाधि (खिताब) ले गये। मात्र एक घटना का अवलोकन करते हैं–

कलकत्ता के पास चन्द्रनगर फ्रांस के अधीन था। अत: बहुत से क्रांतिकारी वहाँ शरण लेते थे। वहाँ 'प्रवर्तक संघ' के संस्थापक श्री मोतीलाल राय उनके बड़े सहायक थे। अलीपुर बम काण्ड(१९१० ई०) के बाद योगी अरविन्द को इन्होंने शरण दी थी। रास बिहारी बोस इनके आश्रम में आते रहते थे। वहाँ से बम बनाने का सामान पंजाब भिजवाते थे। बसन्त कुमार विश्वास ने बम बनाना यहीं सीखा था। रास बिहारी के जापान जाने के लिए न केवल धन संग्रह मोतीलाल राय ने किया था, अपितु पासपोर्ट आदि की भी व्यवस्था की थी।

विश्वासघाती नरेन्द्र गोस्वामी को मारने के लिए कन्हाईलाल दत्त के पास जेल में रिवाल्वर इन्होंने भिजवाई थी और फाँसी के बाद कन्हाईलाल के शव को लेने व अन्त्येष्टि करने में इनकी विशेष भूमिका थी। इन्हीं के मित्र शिरीषचन्द्र ने रोडा एंड कम्पनी की हथियारों से लदी सात बैलगाड़ियों में से एक बैलगाड़ी गायब कर 'प्रवर्तक संघ' में पहुँचाई थी। बाघा जतीन को इनका पूरा सहयोग मिलता था।

एक बार गाँधी जी कलकत्ता में देशबन्धु चिन्तरंजनदास के घर ठहरे हुए थे। मोतीलाल राय उनसे मिलने पहुँचे। गाँधी जी ने बड़ी आत्मीयता से इनके क्रांतिकार्यों का वृत्तान्त पूछा तो इन्होंने उत्साह से सब सुना दिया। गाँधीजी सब कुछ लिखते गये। सब कुछ सुनकर गाँधी जी ने कलकत्ते के पुलिस कमिश्नर चार्ल्स टैगार्ट को फोन मिलाया और मोतीलाल जी के सारे कारनामे सुनाकर कहा–'इस समय मोतीलाल राय चितरंजनदास के मकान पर मेरे पास आये हुए हैं। यदि आप चाहें, तो उन्हें यहाँ आकर गिरफ्तार कर सकते हैं।'

यह विचित्र फोन सुनकर पुलिस कमिश्नर असमंजस में पड़ गया कि गाँधीजी जैसा अहिंसा मार्ग पर चलने वाला राष्ट्रनेता इतने बड़े क्रांतिकारी को क्यों पकड़वाना चाहता है? कुछ देर बाद उसने उत्तर दिया–'इस समय मैं उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकता। उन्हें जहाँ जाना हो, जायें।'

गाँधीजी की भावना का अनुमान पाठक स्वयं लगा लें। क्रांतिवीर उनके उत्तर से सन्तुष्ट नहीं थे।

अन्ततः

स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है।

❐राकेश मल्हान

एक दंत कथा– बहुत समय पहले की बात है। एक बड़ा सा तालाब था। उसमें सैंकड़ों मेंढ़क रहते थे। तालाब में कोई राजा नहीं था। सच मानो तो सभी राजा थे। दिन पर दिन अनुशासन हीनता बढ़ती जाती थी और स्थिति को नियंत्रण में करने वाला कोई नहीं था। उसे ठीक करने का कोई यंत्र तंत्र मंत्र दिखाई नहीं देता था। नई पीढ़ी उत्तरदायित्वहीन थी। जो थोड़े बहुत होशियार मेंढ़क निकलते थे वे पढ़-लिखकर अपना तालाब सुधारने की बजाय दूसरे तालाबों में चैन से जा बसते थे।

हार कर कुछ बूढ़े मेंढ़कों ने घनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर लिया और उनसे आग्रह किया कि तालाब के लिये कोई राजा भेज दें, जिससे उनके तालाब में सुख चैन स्थापित हो सके। शिव जी ने प्रसन्न होकर नंदी को उनकी देखभाल के लिये भेज दिया। नंदी तालाब के किनारे इधर उधर घूमता, पहरेदारी करता, लेकिन न वह उनकी भाषा समझता था न उनकी आवश्यकताएँ। अलबत्ता उसके खुर से कुचलकर अक्सर कोई न कोई मेंढ़क मर जाता। समस्या दूर होने की बजाय और बढ़ गई थी। पहले तो केवल झगड़े झंझट होते थे लेकिन अब तो मौतें भी होने लगीं।

फिर से कुछ बूढ़े मेंढकों ने तपस्या से शिव जी को प्रसन्न किया और राजा को बदल देने की प्रार्थना की। शिव जी ने उनकी बात का सम्मान करते हुए नंदी को वापस बुला लिया और अपने गले के सर्प को राजा बनाकर भेज दिया। फिर क्या था? वह पहरेदारी करते समय एक दो मेंढ़क चट कर जाता। मेंढक उसके भोजन जो थे। मेंढ़क बुरी तरह से परेशानी में घिर गए थे।

फिर से मेंढ़कों ने घबराकर अपनी तपस्या से शिव को प्रसन्न किया और कहा कि आप कोई पशु-पक्षी राज करने के लिये न भेजें, कोई यंत्र या मंत्र दे दें जिससे तालाब में सुख शांति स्थापित हो सके। शिव ने सर्प को वापस बुला लिया और अपनी शिला उन्हें पकड़ा दी। मेंढकों ने जैसे ही शिला को तालाब के किनारे रखा वह उनके हाथ से छूट गई और बहुत से मेंढ़क दबकर मर गए। मेंढकों की समस्याओं का हल होना तो दूर, उनके ऊपर मुसीबतों को पहाड़ टूट पड़ा।

फिर क्या था? तालाब के मेंढ़कों में हंगामा मच गया। चीख पुकार, रोना-धोना--- वे मिलकर शिव की से प्रार्थना करने लगे।

'हे महाराज, आपने ही यह मुसीबत हमें दी है, आप ही इसे दूर करें।'

शिव भी थे तो आशुतोष ही। जल्दी ही उपस्थित हो गए।

मेंढ़कों ने कहा, 'आपका भेजा हुआ कोई भी राजा हमारे तालाब में व्यवस्था नहीं बना पाया। समझ में नहीं आता कि हमारे कष्ट कैसे दूर होंगे। कोई यंत्र या मंत्र काम नहीं करता। आप ही बताएँ हम क्या करें?'

इस बार शिव जी जरा गंभीर हो गए। थोड़ा रुक कर बोले, **यंत्र मंत्र छोड़ो और स्व तंत्र स्थापित करो।** मैं तुम्हें यही शिक्षा देना चाहता था। तुम्हें क्या चाहिये और तुम्हारे लिये क्या उपयोगी है, यह केवल तुम्हीं अच्छी तरह समझ सकते हो। किसी भी तंत्र में बाहर से भेजा गया कोई भी विदेशी शासन या नियम चाहे वह कितना ही अच्छा क्यों न हो, तुम्हारे लिये अच्छा नहीं हो सकता। इसलिये अपना स्वाभिमान जाग्रत करो, संगठित बनो, अपना तंत्र बनाओ और उसे लागू करो। अपनी आवश्यकताएँ समझो, गलतियों से सीखो। माँगने से सब कुछ प्राप्त नहीं होता, अपने परिश्रम का मूल्य समझो और समझदारी से अपना तंत्र विकसित करो।

मालूम नहीं फिर से उस तालाब में शांति स्थापित हो सकी या नहीं। लेकिन इस कथा से भारतवासी भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

जीन्द, आर्य समाज जीन्द जंक्शन द्वारा 'शत-शत नमन शहीदों को' कार्यक्रम आयोजित किया गया। चित्रों में मुख्य वक्ता श्री नरेन्द्र आहुजा विवेक (एसडीसी), भजनोपदेशक प्रताप सिंह आर्य, मुख्य अतिथि प्रदीप गिल, प्रदेशाध्यक्ष युवा इनेलो, अध्यक्ष यशपाल आर्य। इस अवसर पर चौ० पिरथी सिंह चहल, माता सुमित्रा आर्या व माता विद्यावती को सम्मानित किया गया।

ओ३म्

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्रिका है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरुचिपूर्ण सामग्री होती है।

- **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का संदेशवाहक है।
- **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी- व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

शान्तिधर्मी कार्यालय

756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)

जीन्द-126102 (हरियाणा)

मो. 09416253826 E-mail : shantidharmijind@gmail.com